# स्वतन्त्रता
# री
# जोत

# स्वतन्त्रता री जोत

(काव्य)

(डॉ.) ब्रजनारायण पुरोहित

राजस्थान एज्यूकेशनल स्टोर
बीकानेर

पैलो संस्करण : वासन्ती नवरात्र स्थापना, वि. सं. २०४४

मोल : ४० रु. (चाळीस रुपीया)

आवरण : पं. आसाराम गोस्वामी, बीकानेर

मुद्रक : जवाहर प्रेस, बीकानेर

[राजस्थानी भाषा-साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर रै (एक हजार रुपीया) आर्थिक सहयोग सूं प्रकाशित]

---

SWATANTRATA RI JOT *by Dr. Brij Narayan Purohit*

Price : Rs. Forty only

## समर्पण

माँ सरस्वती देवी
रै
श्री चरणां में सादर

सत्यनारायण पुरोहित

# परस्तावो

मानव-मन री विचार-वीचियां साहित्य-सरजण हेत भावभोम बण'र विविध आयामी निर्माण-प्रक्रिया नै सक्रिय करै । सामाजिक, सांस्कृतिक अर ऐतिहासिक परिप्रेखमें रचित कृतियां सूं ही इतिहास री सामग्री परिपुस्ट हुवै ।

जळमभोम नै सुरग सूं भी महती, रुड़ी-रूपाळी मानणवाळा जूंझारां स्वतन्त्रता री जोत नै ऊजळ अर अखंड राखण खातर आत्मोत्सर्ग करण नै तप-त्याग अर बळिदान, साहस अर वीरत्व नै आपरै जीवण में सदीव अंगीकर कीनो है । आजादी री भावना सूं वोरीज्यो वीर-भाव चिरकाळ सूं अजस्र रह्यो है । जद-जद देस माथै हमलावरां रो कुदीठ पडी, मायड़-भू रै लाडलां डट'र सामनो कीनो अर हँसतां-हँसतां प्राणां री बाजी लगावंता हुँकार अर संखनाद कीनो । वां रो अेक ही धेय हो-'आजाद हुवै जननी म्हांरी ।' भारत माता परतन्त्रता री सांकळां में जकड़ीजगी अर परवसता सूं करा'वती ही उण वखत सूं ही आजादी रै दीवानां वळिपथ रा राही बण'र आपणो करतव निभायो । वै इण रास्ट्र-यग्य में साकळ हुय'र स्वाहा हु'ग्या ।

पाणीपत रो वेढ़ि में जद परवसता री काळी छाया भारतमां री ओर प्रसार कर रै'यी ही उण समै सूं ही रणबांकुरा रुद्र रूप धार'र ताण्डव करण लागा । आजादी री लडाई रो लाम्बो इतिहास रूंगटा खड़ा करै अर पग-पग पर माथा अरपण करणियां री याद आवंता ही स्रद्धा सूं सगळा नमन हुवै । इण यग्य रो समापन पनरै अगस्त, सन् उगणीस सौ सैंताळीस रै दिन मानीजै पण असली काम फेरूं ही सेस रह्यो ।

वीरां रो पवीत चरित ही इण काव्य रो कळेवर है । राजस्थानी साहित्य रै निरमाण-काळ सूं अजूं तांई लिखीजणवाळै साहित्य में जूंझारी भावना दूध में रळियोड़ माखण ज्यूं सगळी ठौड व्याप्त है । देस, धरती'र

कुळ-मरजाद री रिच्छा करतां थकां माथा कटावणियां अर बळिपथ रै राही मा' पुरसां री कमी नीं रही है। आ बात सांची है कै जूंझार सबद सागै अेक इसै सूरमै रो चितराम आंख्यां आगै उभरै जको समरभोम में सीस कटियां पाछै भी लड़तो रै'वै अर करवाळ छोड़ै नहीं। पण पाछो दियण री जिणां नै आण हुवै अर 'गुलामी' सबद नै जका गाळ गिणै।

स्वतन्त्रता सारू असंख्य सूरमा हरखावंता थकां सहीद हुया। बां कितरा कस्ट सह्या-उणां रो बखाण करण री सगती किण में?

इण काव्य में पनरै प्रकास है। नानारंगी जोतां इण मे जगमगावै अर प्रकासमान हुवै। पैलै प्रकास में वीरां रै सुभाव रो-आजादी रै दीवानां रो गुणगान है; वीर-भाव रो बखाण है। इणी भाव नै सजोयो है आगै रै 'प्रकासां' में। स्वतन्त्रता-आन्दोळण री अमोल मणियां री चमक-दमक जगमगाहट करै। पनरै अगस्त, उगणोस सौ सैताळीस रै दिन भारतमाता रै 'बोध-कथण' (आसीसां) सूं इण काव्य रो समाहार हुयो है। बां कह्यो-

"सगळा हिळमिळ आणंद पावै
सगळा सुख-दुख में अेक भावै
बस, रिच्छकरण आजादी री
सगळा मन हुयसै सद्-सभाव"

आजादी रै इतिहास रो तानो-बानो बणावणियां दिव्य-पुरसां री गाथा लिख'र आ लेखणी धन्य हुई है। बां री प्रेरक-सगती ही इण में साकार हुई। उण आदरजोग जोतां नै कोटी-कोटी प्रणाम!

वासन्ती नवरात्र स्थापना, वि.सं. २०४४ ब्रजनारायण पुरोहित

# क्रम


| | | |
|---|---|---|
| १. | वीरां गुणां वखाण | १ |
| २. | पावन-प्रताप री प्राण | ८ |
| ३. | हल्दीघाटी री याद | १६ |
| ४. | आयम्यो तमतमाटणो सूर | १६ |
| ५. | शिवा रूप साकार | २७ |
| ६. | सगती लिछमी सार | ३२ |
| ७. | धर्म री फेर जगाई जोत | ४१ |
| ८. | राष्ट्र-आन्दोळण री दृढ़ नींव | ४५ |
| ९. | सुमरणै जळियांवाळो-बाग | ५३ |
| १०. | जोस जद हुयग्यो उजळो आग | ६१ |
| ११. | सीख श्रद्धानन्द जी री साख | ७७ |
| १२. | केसरी-जोरावर-प्रताप | ८८ |
| १३. | गूँज भारत-छोड़ो री छाप | ९५ |
| १४. | रटण रट खून करो बगसीस | ९९ |
| १५. | प्रकासी स्वतन्त्रता री जोत | १०६ |

# वीरां गुणां वखाण

पावन प्रताप नैं कर प्रणाम
सुभटां दिव्यां रो नांव लियां
सुभ स्वतन्त्रता री जोतां सूं
अज्ञान-तिमिर रो ध्वंस कियां ।१।
कर भारत-मां री याद खरी
चितोड भाव री लियां छियां
सगळां अमरां नैं नमस्कार
नित काम सरै जिण ध्यान वियां ।२।
वां राजपाट-वैभव सुख सूं
मायड़ खातर वैराग लियो
निय दुःखां सूं अणवाकिफ हुय
आजाद हुवण रो नेम कियो ।३।
दर-दर भटक्या नीं झुक्या कदै
ते तण्यां मेर उपमा ताई
लंकाळ सूर नाहर सिरखा
जिण हाथाळैं लालो छाई ।४।
वै मायड़-लाल धकाधक कर
मां री बेड़्यां नैं काट करै
कितरां विसुणां नैं भेज सुरग
मन मौत चिढ़ाणां सत्र डरै ।५।

उण नै मरणै री कोड़ घणी
वै कूट करै जमदूतां री
श्रै कदै न डरणा अरि आगै
रे ! पदवी पाय सपूतां री ।६।

रण दूध ऊजळ जामण रो
चढ़ रण-सय्या आराम करै
जण इसड़ा रावत जळमभोम
जिण बंका-डंका अमी झरै ।७।

वै सतवन्ती रा वर बालम
हर घड़ी खुमारी छाय रही
कद चूकै मौकै टौकै नूं
कुण परवस उण री मात करी ।८।

मां ब'नां री सुभ वातां नै
श्रै कदै न भूलै आराणै
चुंदड़ी-पंवरी रो रंग चढ़ै
भू कदै न कस्टै भाराणै ।९।

रिण भार उतारै भूमी रो
अत्याचार्‌यां नै खूंद - खूंद
कुण वसुधा उण री दाव करै
उगरावै पाछो बूंद - बूंद ।१०।

वै नाहर सिरखा बळसाळी
दानी वारिद - रूंखां जिसड़ा
ज्ञानी - वैरागी - प्रणपाली
आज्ञाकारी रावत इसड़ा ।११।

वै भड़ भड़ भड़ वाचाल नहीं
धिन साजन मुनि इम व्रतधारी
सै काज जगत रा सूधा सट
उण री निजरां नीं भ्रमकारी ।१२।

भड़ भार ऊतरै धरणी रो
खल - दुस्टां नै कर चूर - चूर
कुण इळा उणां री दाब करै
उगरावै बण वै सूर मूर ।१३।
खंगड़ हद पूत सपूत खरा
माता री खुसियाळी ! चावै
सट रुहिर - पसेऊ सींच - सींच
मायड़ - भू रो जस उजळावै ।१४।
रण रात-दिवस ही लाग रैं'या
जननी रो जस वरधापण नैं
पच नई रोसणी परगासैं
नित जगमगकारी कण - कण नै ।१५।
नीं स्वारथ मन रैं अरमाणे
कद धीर - वीर झुकणैवाळा
पण पद – पद पर टक्कर पाणै
मर भ्राण – माण मूंछांवाळा ।१६।
वै कज्ज करै हुय मतवाळा
कुण हुय बाधक उण राह अड़ै
कुण मीचु सामनै कूट करै
पेखत जमदूतां आह पड़ै ।१७।
जिण रै पयाण मार्च कळमळ
रिपु गिणे जिणां नै महाकाळ
सुण नांव नास दै सगळो वळ
सागर गिणनो कद ताळ - पाळ ।१८।
हुंकार करंतां वीरां रै
कुण सामो जोवै लालकंवर
जिण जिन्दगाणी सूं मो' नहीं
भड़ रण में दीसै कंवर - भंवर ।१९।

वै आरावळ सा अड़िग वणै
सायर - सी गूंजै लै'र - लै'र
वड़वानळ नै कुण रोक सकै
चूकै नीं, लेवै तुरत वैर ।२०।

वै कदै न मूरत रै वस में
वर मूरत कुंत - क्रिपाण बीच
सहु घड़ी सुलपणी सुखदैणी
कर विजै करै ग्ररि माण कीच ।२१।

मायड़ रो दूध ऊजळण रो
नित ध्यान राखणा आराणै
उण रै जीवंतै निहचै रह
भू कदै न रै'वै भाराणै ।२२।

जद सेना रो बाढ़न्त जोर
कुण रोक सकै मारगियै में
जिण लक्ष्य ग्रेक ही धार लियो
फणि ज्यूण पकड़लै वगियै में ।२३।

जद ग्रेक करै फूंकार जाय
उण विस उतार नीं कह कोई
वै धाव हुवक्का वीर वरै
निहचै कीरत जग में होई ।२४।

किनरी मां - बैंनां हंस - हंसनै
लालां - भायां नै विदा किया
छितरां-छितरा पिसुणां नै छिनि
जीवण - जस रो वै जाय जिया ।२५।

हर घड़ी एक रट लाग रही
`सिंघू - सिंघू सुभ गाणो है
ग्ररि पीठ देखलै आराणै
उण सूं ग्राछो मरजाणो है ।२६।

जद माता विलखै आसा में
    बेटां - पोतां री हेज धर्‌यां
तद कितरी देर - अबेर तकै
    पूर्ण बंधण नै काट कर्‌यां ।२७।
वै लब्बडधक्कै लेवण में
    कद थोडी देर - अबेर करै
नी तैयारी उण वीरां नै
    दाकाळ्यां मिरतु - लै'र झरै ।२८।
उण आंखड़ल्यां रो तेज उरै
    मूंछां तम नै सच सेत करै
पण लालड़ली घण आस पास
    सर - रुहिर हुबळकां हेत सरै ।२९।
भड चालै जद वसुधा कांपै
    कांपै थर - थर हिय काचां रा
ते आंधी - पांणी - तूफानां
    नी गिणै खबोड़ा दांचां रा ।३०।
रिभ्क तरवारां अर कुंतां री
    घमरोळ मोकळी देखीजै
तद काळजियै री कोर तेज
    पग मांड राड़ भल पेखीजै ।३१।
जद सात तुषारां रै पावां
    जाणै वेड़ी पड़गी काठी
रुक केम करै लाचार रवी
    मोवै घोड़ां चालै माठी ।३२।
खं आकासै छावै खं - खं
    दीसै सूरज जिम दड़ी - दोट
किंवा भतूळियै गैण कट्यो
    मोटो किन्नो लोटंत छोट ।३३।

पण मौचु खड़ी पग मांड़ पास
    निय जीव लपालप लाल करै
श्रै गरवीला भड़ ऊभ - ऊभ
    उच्छाव करन्ता चाल ठरै ।३४।

जम मरता मारै सहस जणां
    सत धावां री धमरोळ सहै
कुण उफ उण मूंडै सुणी कदै
    वाळा रण - खेतां रुहिर वहै ।३५।

वै धन रै चक्कर में न कदै
    निय काया नै चकरी करणा
रे ! माण मोकळो मायड़ रो
    कर फरज कजा सपरी मरणा ।३६।

वपु पांच तत्व रो पुतळो है
    आ बात उणां हिवडै धारी
आतम - नत री गीता बांची
    कुण मारै - काटै बलकारी ।३७।

जद मरणो है निस्चै जग में
    कुण अमर वपू साथै लेग्या
मारग अपजस रो महामौचु
    रण पौढ़ वीर सांची कैग्या ।३८।

पण नांव अमर जग में पैला
    मरणो · जस अमर सवाय मिळै
किम तरै चिरमियां मोल्यां छित्र
    भेड़ां सेरां सूं केम मिळै ।३९।

कितरां वीरां रो रुहिर वै'यो
    कितरी लासां भूमी पाटी
कितरां लंकाळां · रा पंजा
    काठो मां री बेड़ी काटी ।४०।

धिन-धिन उण लंकाळां धिन-धिन
वड़ मातावां पर बलिहारी
जिण पूत - सपूतां नैं जाम्या
चहुं ओर करै जय - जयकारी ।४१।



# पावन - प्रताप री आण २

परवस जद भारत - भू हुयगी
    मुंगलां री फोजां आय जमी
राणा सांगा री मेट आस
    बाबर - तळ हेठैं जाय थमी ।१।

जद पाणीपत री वेढ़ि बीच
    दुरभाग आवंतो दीसै हो
धीरैं - धीरैं बढ काळ रात
    गळतै कागद जिम फीसै हो ।२।

जिण माण - पाण राखण चाही
    निय असु री परवा कर्दं न की
खिण-खिण खिण प्रळै मावणो रवि
    हा ! आथम री तैयारी ही ।३।

कुण भार सांभमी मायड़ री
    कुण हाथां कुंत - कृपाण करैं
कुण घूमन्ते मैंगळ - जिम जा
    महती वीरां री मोचु मरे ।४।

हा ! आज बूड़ते कुण काढे
    दृढ़ नक्र - सूर दातांवाळो
किण हातां रिच्छुण डोर छोड़
    कुण भार सांभसी मतवाळो ।५।

जद कवळ अकली जवामद
टकरै दंताळी पार करै
कुण सामै टक्कर रै टिकणो
जिण देखण लोही – जाळ झरै ।६।

सांगाजी लोक पयाण कियो
सगळां सूरां मातम छायो
हड़कण–धड़कण ओ कीं हुयग्यो
दु:खां रो दधि सामो आयो ।७।

श्री उदैसिंघ बैठन्त पाट
झगड़ां – टंटां निय राज कियो
किण घड़ी जिळमियो वो नाहर
दुखड़ां सूं अलग न होय जियो ।८।

पण फेर पळटियो पाट – पटळ
श्री प्रताप गादी सोभ करी
मख – तेज ऊजळ तमी मेट
उगतै सूरज री ओप धरी ।९।

सगळां आसावां नेक धार
मन धण उछाव लै रण लागो
अर पळळ – पळळ तड़िता आभै
चमचमाट कर सीधू बागो ।१०।

वो कदै न झुकिया अरि आगै
मेवाडी माण सवायो हो
वो रीत – नीत रो वारिध – वर
जस भारत – मात वधायो हो ।११।

उण भ्रूहां मूंछां मोड़ कड़ी
तण रुद्दर रूप हबीड़ करै
सांकरड़ां रै वन सूकै में
धक दावानळ कुण जाय धरै ।१२।

वो रात – दिवस सोचै मन में
मायड़ रो करज उतारूंला
जिण जळम दियो पोषण करियो
हूं दीनो वैण निभाऊंला ।१३।
मां ऊभी सामैं मूक मौन
किंचित नीं मुख सूं वैण करै
खुसियाळी हुयगी निपट खूट
चख – मग सूं सावण धार झरै ।१४।
निय दुखियारी माता नै तज
कुण वीर पूत भड़ है वाजै
जद आंसू मां रै चखां झरै
लख भोम सपूती है लाजै ।१५।
धीरज – साहस दृढ़ निस्चयता
अर जळमभोम री खुसियाळी
उण वडै त्याग सूं नेम कियो
पातळ मायड – हित प्रतिपाळी ।१६।
रण – माटी रो हृद वज्र-रूप
कद दुख – झंझा डगमगवाळो
लठ हियो अड़ावळ अडिग लियां
मच चढग्यो नाहर मतवाळो ।१७।
अन्यावां नै कद सहै अड़िग
म्रै आण – माण करणवाळा
नीं कदै अड़ोकै मोकै नूं
मन चढ़ै खुमारी मतवाळा ।१८।
पावन – प्रताप रो नांव पेख
चख-मग में चपळ चौंध जावै
भट.चरण-कंवळ सिरि सीस झुकै
सरधा रा भाव हियै छावै ।१९।

राणा सागै वै बाल – रवो
वन-वन री खाक खूब छाणी
अर जगमग रै कारण सूं अण
जीवण हरखाणी कद जाणी ।२०।
कुम्भळगढ़ में बाळापण वय
चितोड़ पूगियो नर – नाहर
तळहटी दुरग में डेरा दे
वर यूथपति कंवळा – डाहर ।२१।
भीलां रो हो हितकर भोडू
जगळां सूं उण घण हेत कियो
वन-वन भटक्यो पण झुक्यो नहीं
वो कद सुख री जिन्दगाण जियो ।२२।
सिंघ जन-जन में इतरो घुळग्यो
जन नै जनता सूं अेक भाव
खाणो – पीणो सागै सहु रै
सपरो सगळां हितकर सभाव ।२३।
बत्तीस वरस री वय में वै
कांटां-जड़ियो सिर ताज धर्‌यो
पनरै सौ बोवत्तर में पण
भल पाट उदैपुर नाज कर्‌यो ।२४।
पुज सिसोदियै कुळ तेज प्रगट
जस धवळ प्रकास्यो हद भारी
कछवाही – साही कटक-कटक
त्यारी बेढ़ी री की सारी ।२५।
समराटां रो वो सहनसाह
वो सिंघ – केसरी वनमाळी
घन-स्वारथ रो नी धर्‌यो ध्यान
बाजो उण अेक हाथ ताळो ।२६।

पण जठै मानसिंघ मूंछ पाण
मेवाड़ी पाग पगां चाही
उण कूट नीत री पाण आण
साही खिदमत लाली छाई ।२७।
मुख कूटचाळ रै धणी मान
पातळ सूं मुळै करण चाही
संदेशो नमन करावण रो
साही फरमायस पूंचाई ।२८।
पण धरम - धुरीणां में प्रवीण
भल तेज किसाणू सुभ पवीत
मरवस होमै पण झुकै नहीं
डूंगर धारै कद ग्रीष्म — सीत ।२६।
जद चोट पड़ी सदेसै री
कुलणै री स्रवणां सुणी गाथ
तणगी मूंछडल्यां बांकड़ली
रूं — रूं ऊभड़तै तण्या माथ ।३०।
कुण ताखां रै विस रो पाचक
कद ना'र हिरण — घर नीर भरै
कुण तेजड़ळा भट वीरां रै
सामी छाती ललकार करै ।३१।
जद हळकारै सामो देख्यो
इक तप्त मूरती आगै ही
आंख्यां सूं अंगारा चम चम
काया भड़ - आतम बागै ही ।३२।
सदेसै रा छकड़ अख्खर
मुणनां गरज्यो किम नेम टळूं
कुण माण घटावै मायड़ रो
हूं भम सूं जुध में नहीं डरूं ।३३।

हूं करी प्रतिग्या सहु सुणलो
इकलिंगजी नेम निभावैला
साही दरबारै जीतै - जी
ओ कदै न पातळ जावैला ।३४।

चाअे तजदे रवि तप्त-भाव
सीतळता नै निसिनाथ तजै
पण भाणवंस रो ओ पातळ
भो! कदै न अकबर नांव भजै ।३५।

बाळू सूं निसरै तेल भला
मिसरी तज दै निय मधुर भाव
दधि तैर पार ऊंठ भल करलै
नी पातळ पळटीजै सभाव ।३६।

सूरज पूरब में ऊगणियो
चाअे पच्छिम में उदै होय
पण सूर्यवंस में उपजणियो
जीणो चावै नी भार ढोय ।३७।

हूं जिण भूमि पर जळम लियो
उण रै खातर मर जाऊंला
नीं आस करै अकबर म्हारी
ना जीवित दिल्ली आउंला ।३८।

नी दूध पियो हूं लांकड़ नो
हू सिंघणी रा थण पान किया
उण जे'र लिपटिये आंचळ में
किनरो जीणो, कुण अमर थिया ।३९।

जद अेक दिवस तो जाणो है
तद वारंवार क्यूं मरण सहूं
हूं नमन करूं एकलिंगजी नै
बन्दगी अकबर नै केम कहूं ।४०।

बस, आज आखरी निरणै है
इब कदै न संदेसो कहसी
कच्छावां-कुळ रो कंवर मान
निय ठोड़-ठिकाणे ही रहसी ।४१।

हूं कदै न धमक्यां सूं डरणो
नीं सुख-दुख में चख भेद करूं
मायड़ रै दुख सूं दुखी मनां
हूं पातक सूं घट नही भरू ।४२।

है मान अेक पथ रो राही
हूं बीजं पथ री राह करी
किम भळ करै तप-तेज कदै
कुण दुज-बारस इक ठोड़ चरी ।४३।

आ बात सुणन्तां दूत गयो
उण आरावळ सो अड़िग जांण
मन ही मन नमन करंतो वो
हिय जाण प्रकास्यो तेज भांण ।४४।

अर सायर गुहिर अनळकारी
हद ज्वार हियै मे मान्यो हो
झट हाथ लेय निय मीत कुंत
चख तडित चमाचम राच्यो हो ।४५।

हूं आज ऊजळूं धवळ जसां
रज-मेदपाट रो प्रजळाऊ
भल भारत-भू री बची लाज
हूं असि-कुन्तां सूं उजळाऊं ।४६।

परवस हुय जग में जीणे सूं
आछो सपरो मरजाणो है
औ नूंतो दीधो मान इसो
सीधो नरकां-घर जाणो है ।४७।

कतरो-कतरो उण लोहू रो
मायड़ रो फरज उतारैला
सिव इकलिंगजी री सा'य सदा
वै ही बुध – बल दे तारैला ।४८।
बस अेक अरज है इष्टनाथ !
सदबुद्धी मम मन वसै सदा
इण अस्थिर काया माटी नैं
कुड मो' – माया नीं कसै कदा ।४६।
म्हे तन – मन सूं हां साथ नाथ
सहु साथ्यां भट हुंकार करी
अर रूं – रूं सूं आ धुन उमटी
हामळ सगळां टंकार भरी ।५०।
सहु अेक भाव में बोरीज्या
सगळां हिवड़ां में ज्वार भर्‌यो
बस एक हिलोडै कट कगार
सगळां कर नमन जुहार कर्‌यो ।५१।



# हल्दीघाटी री याद

भारत - भू पर आमणा
  आ अमरां मन भाय
इण रै खातर मानखो
  प्राण अरप सुख पाय ।१।

राजस्थानी भोम री
  हरियाळी हरखाय
सूरां वीरां री सदा
  फूलै फसळ फळाय ।२।

वीरां रो वीरापणो
  काट बंधाणां काट
पातळ जस पायो परम
  प्रकट उदैपुर पाट ।३।

हल्दीघाटी नांव सुण
  रूं - रूं उमगै जोस
वीर पोढ़िया तोवणा
  मान करण निरदोस ।४।

वीर लड़्या हित देस रै
  अेक - लक्ष्य - इक - भाव
खांडां तरवारां खणक
  जोस भर्‌यो साभाव ।५।

वीरां रो वीरत्व वर
वीर भाव साकार
मा'राणा पातळ महा
वळ्चा करत हुंकार ।६।
धम्म-धमाका बोचि में
फटाफट्ट धड़ धाड
महाकाळ रो रूप धर
पिसुण—कळेजां फाड़ ।७।
सोनळ धरती कारणै
जळमभोम हित धाय
धणी वीरता सूं लड़्यां
सूरज पदवी पाय..
पनरै सै छीयन्तरै
रण रत्न राखण माण
अमर नाव जग में कर्‌यो
हळदीघाटी थाण ।९।
ओसर चूकै नीं कदा
वीर न दूध लजाय
पग पाछो पण दियण रो
मन वीरां नीं दाय ।१०।
हँसता-हँसता भल भिड़्या
जळमभोम प्रजळाय
रगत—रंग्यै जस धवळ नै
कैम वखाण्यो जाय ? ।११।
भारत भू रा लाड़ला
माण पाय भरपूर
काज देस रै कस्ट सह
सूरज जिम तप सूर ।१२।

## आथम्यो तमतमाटणो सूर — ४

जीवण ! तूं कितरो धोखो है
तूं खांड लपेट्यो काळकूट
तूं सरसर करतो वै जावै
सगळो सुहिणो फ़ट जाय टूट ।१।

खिण अवस करै पूरी खिण-खिण
पळ-पळ घड़ियां री घूंट-घूंट
म्हारै-थारै उळझाव भरयो
जीवण रो घड़ियो जाय फूट ।२।

जीणै-मरणै में हां तो
कुण जीवण री मै'मा जाणी ?
कूकर-सूकर सम श्रेम जेम
कर लटवा कूड़ खाक छांणी ।३।

पण पड़ै जावणो श्रेक दिवस
राजा-सेवक नर-नार वीर
कुण टाळ सकै प्रतिसर्ग घड़ी
धुर जोद्धा-चाश्रे श्रतुळ धीर ।४।

काळजियै में बा हूक करै
उण नांव लेवतां उठै पीड़
बा रात गिणै नीं दोपारै
श्रेकान्त गिणै ना गिणै भीड़ ।५।

छांनै-ओळै वा नीं छोडै
छोड़ै ना वा मिन्नत करियां
पण पकड़ पछाड़ै वादै पै
आ तोड़ै तिणकै री वरियां ।६।
ज्यूं अेक लसरकै माछर नै
जमलोक भेजदै मारणिया
ज्यूं कीड़ी-माखी मारण में
नीं सोच करै पापी हणिया ।७।
पण काळ गिणै नीं पाप-पून
वो आय बळै अणनूतै ज्यूं
दम टेम खिणिक ही नीं देवै
डरपै सगळा उण दैत्यै स्यूं ।८।
लपलास लपलसी रसना नै
लड तोड़ सकै कुण वांकड़लो
सिंघ-वज्जर रै पंजा बिच सूं
भिड़ बच जावै किम लांकड़लो ? ।९।
जिण री अदीठ गर्जन सुणनै
झट होसो-सांस कूंच करदै
ऊंची-नीची धुग-धुगी हुवै
रग-रग में रोग-सोग भरदै ।१०।
आंख्यां दीठै घण अंधियारो
जोती ना टिकै परी जावै
टूटै बाणंको नाड्यां रो
हा-अोय कियां वचणो चावै ।११।
जिण गळपटियो गळ में धार्‌यां
नाहीं निय जिन्दगाणी गाळी
सच डाकी ठाकर राग-सरस
भल पाळ स्वतन्त्रताई पाळी ।१२।

जिण सहु सुखां रो त्याग कियो,
        दर-दर भटक्यो पण झुक्यो नहीं।
हद आरावळ रो अड़िग हियो
        जीवण दुखडां सूं झुक्यो नहीं ।१३।
जिण ललकार्‌यो वैभव-सुख जद
        संघरसां री सुभ पाळ रळी
कस कफण बांधियो केसरिया
        फळ कोमळ फळ री कड़ो फळी ।१४।
मच गिणै मोचु नै माखड़ली
        सो कदै न डरपै डक्कण सूं
इण वीरां नै घड़िया इसड़ा
        कुण ढक दे उण नै ढक्कण सूं ।१५।
खुल्लम खारा वै खेल-खेल
        नित कूट करै जमदूतां री
जोवै वै रात-दीह जिणनै
        करणो कुण होड़ सपूतां री ।१६।
वै तपै सदा निय तेजां सूं
        कुण देख सकै सामो उणरै ?
वै निजर गिडावे जिण वेळा
        धरती धम्मै भटकै फण रै ।१७।
कच्छप री पीठ हिलोड़ा लै
        भूकम्प हुवै टंकार भरयां
फण सेसनाग रा कम्पीजै
        हड़कम्प उठै मनवार करयां ।१८।
वै इतिहासां रै पन्नां नै
        सोनै रै आखरां सूं मांड़ै
वै नांव उजाळै जामण रो
        फट नुंवां पगलिया भल छांडै ।१९।

वै समझोतो नीं करै फदै
नीं दुःखां सूं डरणैवाळा
वै रात जिळमिया इसड़ो वर
महु रै दुःखां हरणैवाळा ।२०।
वो फड़ो रूप कीकंजी रो
पूरण जगती हुवतो दीस्यो
जिण खेल खेलिया दिव्य गजब
सिघणो री सीख खरी सीस्यो ।२१।
रै कंचन-काया महावीर री
अकड़ जकड़ती जावै ही
वो दीप्त तेज च्यारूं 'कांनी
असंगत आभा छावै ही ।२२।
वो तणियों वक्षःस्थळ रवि रो
इब सिथळ मसोस्यो दीखै हो
पण आंख्यां री वा आब चमक
विद्युत सरणाटै कीकै हो ।२३।
मन उथळ-पुथळ धमरोळ मची
भावां रा भाव तण्यां भारी
चै'रै री वंकिम रेखावां
उरम्यां रा ताव बण्या खारी ।२४।
सत भाव आयनै हिवड़ै सूं
जीभड़ली सूं टकराव करै
पण आगो-पाछो देख-देख
झफ वैण बारनै नहीं झरै ।२५।
गिट गिटक-गिटक उण भावां नै
झकझोर दिया साथीड़ां नै
कर वेठा-वेठा सोच करै
किम गिणै सिघ हाथोड़ां नै ।२६।

जिण रै पयाण हुवती कळवळ
जिण निजर माचती मीचु-आळ
रत कीको सूरज भारत रो
भड़ वीरां री भळ खरो माळ ।२७।

मछ सूनो आज थपेड़ां में
कीं भाव-वीचिकावां गै'री
जिण सुमन गिण्या असि कुन्त असु
वो काळो काळकूट जै'री ।२८।

खुद ताखां रो विस खरो-खरो
कुण उण री होड़ करै लैरी
भल पत पर बैयो ऊमर भर
वै'ती सरिता आपै ठैरी ।२९।

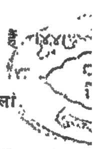
कीकै नै अरज करी सगळां
मन-भावां नै कर रोक-राक
चख-मगां स्रोत झरतां-झरतां
पिघळे हिवड़ै नै ठोक-ठाक ।३०।

जी, बड़ो हुकम फरमाईज्यो
कीं बात अटकगी कण्ठां में
ऊभा चाकर चरणां अरपित
मछ डरां न बीड़ण गंठां में ।३१।

स्वामी हो म्हांरा धुर पवीत
हां बळियारी श्री चरणां पर
सहु काळजियै री कोर-कोर
मच-माचै काटणा पिसुणा सर ।३२।

प्रण करां प्राण-पण सूं पूरो
सिव इकलिंगजी री साख करां
नीं वादै सूं विमुहा नाठां
मेवाड़ी पाग न दाग धरां ।३३।

जदताणी रत री .अेक पुटंग
रैसी-रैसी इण डोळ मांय
नीं वैण तोड जोणो चावां
चलती-फिरती लख छांव छांय ।३४।
प्रभु ! इतरी मे'र करो जल्दी
म्हे सैणे सकां न देख पीड़
दो हुकम हणे माचां कळवळ
पिसुणां री करदां भीड़ छीड़ ।३५।
कीं गुना हुयो भागे म्हांसूं,
नीं करै छिपाई कई बात
भल हुयो किसो अपराघ बड़ो
हां वैठां सगळा अेक छात ।३६।
सै चावै इमरित वैण सुणण
स्रवणां रा पडदा उल्लासित
आंसू झारन्ती आंखडियां
हुयसी थां सुख सूं हुल्लासित ।३७।
आ बात सुणी थिर भाव कियां
असि-कुन्त निरख गंभीर हुयो
भर छोड़ निसासा फूंकारण
राणा सह प्रमुखां मीर हुयो ।३८।
भावां री लड़ी पिरोयां भल
गदगद कण्ठां सूं वैण झर्‌या
सह वैठा सुणता चुप्पीकर
सुणणे उत्सुक पुट-स्रवण करया ।३९।
मद्धिम दीपक री बाट जेम
बुझती-बुझती घण परकासै
दिप अेम बुझन्तो रतन-दीप
झुकती-झुकती अण-उजासै ।४०।

वै तणै भुंवारैं वैण कह्यो
म्हारो म्रो दीप कुण धारै
सुभ जोत जळाई जतमां सूं
तूफानां तरणी कुण तारै ।४१।
धमरोळ - मचे - मन सोच घणो
की कहूं म्रमरसिंघ रै खातर
म्रो टावर है, नीं पक्यो म्रजै
नी सुखां रो सपरो पातर ।४२।
सच वचन करै म्हासूं सपरो
कुण नीं सन्धी री हांम भरै
जदताणी जिन्दगी में जिन्दगी
वैरी रा चक्का जांम करै ।४३।
नी ताज कमल म्रर फूलां रो
म्रो तखत न सुख री सय्या है
म्रो राणा सवद न म्रारामैं
पण सबसूं ऊंची मैया है ।४४।

कुण भारत - मां रो दूध सुमर
कुण रजपूती ऊजाळैला
कुण भारत मां रो वदन निरख
बूठा वैर्यां रा बाळैला ।४५।
रिस वैण कह्या म्रर राणाजी
चुप हुयग्या चाय पडूतर नै
सगळां मुख म्रेक बात म्राणी
नीं कदै हटां रण ऊतरनैं ।४६।
म्राथूणैं ऊगै जाय रवी
चाम्रे ऊगळैं ससि म्राग म्राय
चाम्रे चकोर पत नैं तोडै
पण म्हे पळटां नीं लगा लाय ।४७।

इण जोनी नै प्रजळावालां
पच तन – मन वारां मायड़ पर
कतरा - कतरा खूं रा वै'सी
पण दाग लगै ना वेजड़ पर ।४८।

आस्वासण पाय प्राण - पण रो
मुरझायो गणो फूल उड्यो
जीवण मुक्ति पा मुखी - मुखी
जग सूं मो' - माया बंध छुट्यो ।४९।

वो पूज्य लाड़ळो मायड़ रो
मायड रो काज सही करग्यो
खप जोत जळाई निपट खरी
सगळां मन देसप्रेम भरग्यो ।५०।

मायावी मो'रै चक्कर में
स्वारथ रा बीज पनप पावै
नीस्वारथ जीवण त्याग करै
उण नै नी कदै काळ खावै ।५१।

पावन प्रताप रै नर - वर तनु
पायो अमरत्व खरो जग में
वो निपज्यो पूत सपूत खरो
नीं भटक्यो जीवण रै मग में ।५२।

पातळ रो नांव अमर जग में
जस उजळो दीप्त प्रकास भर्‌यो
बेदाग चमकणो धुर - प्रवीण
सूरजवंशी रवी पूत कर्‌यो ।५३।

आँसूड़ा भरतो आंखड़ियां
रुकिया कण्ठां किम वैण झरै
तत पांचू मिळ्यां पंच तत में
अतुलित बळ रो कुण तोल करै ।५४।

# शिवा रूप साकार ५

सीस नवाऊं सूरसिरी
वीर सिवाजी वार
कदे न हिवड़ो कळपियो
सिवा रूप साकार ।१।
सदा सुलपणो सोवणो
आजादी रो रूप
केम निभावै उण कदे
जबरदस्त जग – भूप ।२।
हियो मसोस्यो जद घणो
देख बंधणां मात
मोम वण्यो मन मोवणो
वणग्यो वज्जर गात ।३।
आजादी री जोत वण
जीवण – नेह संजोय
याती – भावां वीरता
असि - सूं जगमग होय ।४।
मन मौजी मन सूं कियो
मां , रो माण · सवाय
रिच्छक खुद सिवराज जद
कजा .· करै कुण जाय ।५।

सदा सुरंगी चाल शुभ
भिड़ै काळ सूं जाय
करै वीर हुंकार 'वम'
काळ न सामो श्राय ।६।
उचित न्याव रै कारणै
जय - जयकार सदाय.
सहु धरमां समभावणै
द्वेस न किण सूं थाय ।७।
काळ पियां जद हद करी
जद सैं हुयग्या मौन
उणी काळ में उमगियो
भीणै वारिद भौन ।८।
छोटै वपु हीमत छटा
किण विध करूं वखाण
वामन - रूप धर्‌यां छळ्‌यो
श्ररि - बलि दुस्टा श्राण ।९।
श्रफजल खां री चाल - कटु
चली न सामै जाय
पकड़ पछाड़्‌यो केसरी
निकसी उण मुख हाय ।१०।
घणो कियो छळ हद करी
श्रफजल - म्रिग मक्कार
पण गरज्यो लंकाळ जद
श्रेक झपटै मार ।११।
सिंघ सामै कीकर लड़ै
सुसियो श्रर गजराज
हाथाळै हणनो हटै
श्रेकळ भिड़ म्रिगराज ।१२।

मायड़ देखं विळखणी
कुण इसड़ो जग - पूत
आंसू जननीं आंख अर
देख बण्यो जमदूत ।१३।

सागर - रण सरणाट में
घूँ - घूँ घूँवाधार
कदे न कायरता करी
कर्‌या वार पै वार ।१४।

रामदास मिळिया गजब
गुरु जिणनैं गंभीर
सिद्ध - दिढ गुटकी सही
समभ चलायो तीर ।१५।

पोगातो वो तुरत ही
मां वैं'नां निय ठौड
कदे न मन मैलो कियो
धिन - धिन ऊजळ मौड़ ।१६।

अेक दिवस री बात है
दीठ - राज दरबार
राजकाज - चरचा विचै
आयो इक सरदार ।१७।

जीत - खबर सांभळ जदै
पेल साथ चकडोळ
इचरज सूं पूछी विगत
बोल्यो पड़दो खोल ।१८।

तोफो इण में तोसणो
मिळ्यो भेंट परमाण
आज जुद्ध में जीतणो
मूभ वधायो माण ।१९।

इतरी सुण तेवर चढ़्या
हुवग्या चख - पट लाल
अगारा बरसावंता
हाल करै बहाल ।२०।
माथै रा गळ फंलग्या
हाथ धरी तलवार
रूं - रूं जाणै रोसणा
मूंछ्या तणगी ना'र ।२१।
कड़क उठ्यो झट केहरी
रे घूरत मक्कार !
दुष्ट करी थें दुष्टता
डूब्यो काळी धार ।२२।
आ काळस धुपणी अरे !
सोणित धार मंझार
पण, पण पापी पापिया !
भूमी माथै भार ।२३।
पापी, काळख पोतणा !
कियो पाप - आचार
कींकर सामैं इब खड़ो
मरजा ओ लाचार ! ।२४।
फेर मुखातिब हुय परै
कंपित बोल्यो श्यात
मां माफी देवो मनै
दुष्ट करी घण घात ।२५।
म्हारी सम्मत जे हुवै
इण में रत्ती अेक
हियो चीर सामैं धरूं
टूटै नी मम टेक ।२६।

आद भवानी आपनै
खड़ी उजाळै नूर
माफ करो, मां थे मनै
गुनो हुयो भरपूर ।२७।

मां माता अम्बा खड़ी
आद भवानी रूप
हूं सिवरूं जिणनै सदा
दुष्ट विदारै चूंप ।२८।

म्हारो सगतो किम करै
सगती रो रखवाळ
थारै घर इण ही घड़ी
पूगावै रिछपाळ ।२९।

मां पण विनती अेक है
कष्ट हुयो भरपूर
करो कृपा पावन करो
करो पाप चकचूर ।३०।

यादै न हूं परवस बणूं
मोसै मायड़ सान
जळमभोम हित अरप दूं
रैवै मोती - पाण ।३१।



# सगती लछमीं सार

व्योपारी बण आवणवाळां
अंग्रेजां री जद पोल खुली
जद धीरैं - धीरैं होस कियां
डाकी - डाकां भू डोल डुळी ।१।

उण समैं सह्‌ आकळ - बाकळ
खळबळी हियां माचण लागी
किम करां केथ सरणो किण रै
हुयमी आवाजां प्रति घाघी ।२।

पण रणजीत सूं हार खाय
रण हारडिंग्ज सिक्का पाई
घर - धीर खालसा बाकड़ळा
गम मेट मान खुसियां छाई ।३।

पण डोर समेट्‌यां परल पार
दुरभाग सामनैं दोसैं हो
काळो छाया में डणग - बिणग
मरियोड़ो बणियो फोसैं हो ।४।

जद डलहौजी री कूटनीत
लोगां ने अखरण में लागी
सुरसा जिम मूंडो फाड़ खड़ी
मानवता पड़गी पड़ दागी ।५।

हद राजकरण विस्तार घणो
सासन रो चंदोवो छायो
अंग्रेजां फूट करणआळी
नीती सूं फंदोदो चायो ।६।
जद फूट पड़ी बांकडळां में
भाई नै भाई काटै हो
पिसुणां रा पांव पखारण पण
काळजियो सजणां फाटै हो ।७।
लड़ जळमभोम रा लाड़कंवर
आपस में लड़णै री ठांणी
खण समैं वाड़ ही खेतां नै
भखण नै तरवारां ताणी ।८।
रंग - राग उड्यो भड़ वीरां रो
निय खानदान री सुरत कियां
तणगी मूंछ्यां मरदानां तद
लड़ चावै बदळो तुरत लियां ।६।
उण आसावां विस्वासां नै
किम कलम काठ री लेख करै
जिण रो इतिहास लिखण खातर
. रत रगत मसी . सूं काज सरै ।१०।
कथ कंचन - काया मोळ केम
कागद माडण किम समथ हुवै
चप्पै - चप्पै विरताम्त भड़्यो
. अमरित - नीझर इतिहास चुवै ।११।
जळ आग लपालप भड़क उठी
वा जोत भळकती पैली ही
अस्टादस - सत सत्तावन · मे
आजाद तरंगा फैली ही ।१२।

चोखे मोके नें कद चूके
    मायड़ - हितु फरज निभावणिया
वे हुळस - हुळस हुंकार करे
    पाड़े पिसुणां यस पावणिया ।१३।
वे स्वतन्त्रता रा स्रोत खरा
    अवगाहण मुगत नाक राखे
वस अेक वार में दिव्य वपु
    भड़ इसड़ों सांसो कय भाखे ।१४।
दट आजादी रे दीवानां
    आजाद हुवण रो नेम कियो
मगलपांडेजी वीर महा
    झंडो तूफानी हाथ लियो ।१५।
वां बटन दवायो तुरत वैठ
    लपटण पळटण रो लाल हुवो
आरयाचार्यां प्रतिकार जता
    बोयो आजादी - बीज नुवो ।१६।
फांसी रो सजा दइ दुस्टा
    मन वे डरता कद मतवाळा
मेंज कांटां - कस्टां सुखमाने
    वे आजादी रा रखवाळा ।१७।
वा जोत जळाई इसो अलख
    लख आंखां खून उतर आवे
वां रे उफाण रो अेक झलक
    कायरता - भाव परा जावे ।१८।
या आग लगी मेरठ में पट
    झट बीजापुर में जाय झरी
गोरखपुर में निग्र रूप लखा
    अ् ताकत सगळी ज्वाळ भरी ।१९।

वा डलहौजी री चाल दीठ
भखणो अजगर हो भीमकाय
पच पसर-पसर कर खसर-पसर
घुम घणी मचाई चायमाय ।२०।
भड गटक-गटक घण भीमकाय
जद लाव-लाव री रटन लगी
लोभी - पापी रै किसो धरम
जग पूत अगम झट भड़क जगी ।२१।
रच आस लपटां आसा री
चिणगारी नै विस्तार करी
सोचै विस्वास जगावण सूं
सगती सगती में अनुप भरी ।२२।
जद झांसीवाळी राणी रै
खोळै री बात नकार करी
खबरां पूगी रणवासां खट
क्रोधण सिंघणी हुंकार भरी ।२३।
है कुण जिळमियो भूमि पर
बहत पांणी नै रोक करै
है कुण जिळमियो धरती पर
नाहर थापड़ळ्यां ठोक चरै ।२४।
निर्भैमन वीरां रै मन नै
पण फोर सकै कुण वसुधा पर
कुण रो मां सूंठ इसी खावो
नाहर सामै ऊभै नोडर ।२५।
जिण री हुंकार सुणतां ही
कितरां रा प्राण पयाण करै
सामै देखै कुण उण जम रै
सामी छाती कुण जाय मरै ।२६।

धिन सतवन्ती लिछमी बाई
नीं उळटी आग्या अपणाणी
उथळो दीनो रणवासां सूं
नी वात कदै भुखणी जाणी ।२७।

वे आंख्यां आग बरसणी वस
तिम तेज अगारां ज्वाळ जळै
सख भसम करन्ती लंकाळी
झांसीराणी भळ झाळ भळै ।२८।

उण मरदानां नैं मात कर्‌या
धिन पुरस वेस अदभुत धार्‌या
जद रास गही रण रथारी की
बांकड़ळां हरख–हरख वार्‌या ।२९।

भड़ तुरेंवाळी तेज भाम
सच माण–मरण मरणो सीख्यो
फौंनिगै डाकी जाळ–डाळ
जाळी रस्सो झट पट खीच्यो ।३०।

निच कांटो फैंस्यो फांसण नैं
चख–मखां झर्‌ळां आवत दीठी
पण पारा हो बो खरो पर
माखी समझी जिण ने मीठो ।३१।

रे ! छातो छेड़ टांटियां रो
कुण मुख री नींद हराम करो
दुरगा नैं अबळा नार देख
खळ भूल मोकळी करी खरी ।३२।

कुट नाकाबंदी खूब करी
पण मायड़ जोस उफाणै हो
दधि मोवां नैं झकझोर तोड़
कुण तूफानी गति जाणै हो ? ।३३।

वा लै'र लै'रका लेण बढ़े
कुण उण री थाहां तोल करै ?
रण ज्वाळ-जाळ ज्वाळामुख री
रिरतक होळी कुण वळै मरै ? ।३४।

सीयेदाऊ नै कुण नूंतै
कुण ऊंवै मारग जाण पड़ै
पण आंधो हुय मद राज-पाट
वो ऊंवा - सूंधा खूब घड़ै ।३५।

चामुण्डा रूप धर्‌यो चण्डी
मतवाळी बा रण चण्डी ही
आग्या सुणनै कैनिंग पण री
वा कदै न ज्वाळा ठण्डी ही ।३६।

जिण महिसासुर नै पकड़ धर्‌यो
कर मरदन मही असुर मार्‌या
सट रगतबीज नै भेज सरग
बरसा - कारन्त अमर वार्‌या ।३७।

जिण चण्ड-मुण्ड झट चूर कर्‌या
ना करी देर इक पळ भर री
विण रै हाथां में सस्त्र वेख
बळिहारी गाऊं उण कर री ।३८।

अयि दोय हस्त या अस्टभुजी
अस्टादस चाये वीसभुजी
मां कात्यायनि ! इद रूप धर्‌यां
वर निजर पड़न्ता टीस बुझी ।३९।

किम अंगरेजां री दुस्ट फौज
रण आय सामनै ऊभ सकै
जिण मनां हवड़ का कपटां रा
भुलणा माथा असि-झटक झुकै ।४०।

वै यग्य मांड़ियो धुर पवीत
मां लाड़लड़ां आ'वान कियो
बळिवेदी झांसी थाप वळै
साकळ लिछमीजो हात लियो ।४१।

वै होता हा उण यग्य बिचै
पण यजमानी रो रूप धर्‌यो
आतम – तत नैं लख वार वार
स्वाहा–स्वाहा आ'वान कर्‌यो ।४२।

वो अदभुत यग्य वरंकारी
साकळ जिण री जजमान बणी
निय होम वपु कर स्वाहा धुन
घर जोत प्रकासी घणी घणी ।४३।

रण में पूगी कर विजै करण
अर रूप प्रचण्ड चण्ड करियो
हातां में असि चमचम करणी
भट सगळां जोस गजब धरियो ।४४।

तिम वेहूं हाथां तरवारां
वारां पर वार करण लागी
गड़गड़ा'ट करतां घम्मगड़ा
हुय तितर – बितर भागा बागी ।४५।

जद जोस सौगुणो भर जिव में
वै पीछो कियो हकाळा दे
पण धोखै सूं घिरगी पनगी
विस फूकारी जीवां वे – वे ।४६।

पण हात दोय मल जोर कर्‌यो
हज्जारां हाथां मात करो
दुरभाग पीटणो आय मर्‌यो
भूंडै नाळै हद घात भरी ।४७।

घोटक नूंवो असवारी रो
हो अकड़ - जकड़ तणणैवाळो
तण अड़ लगाई ढील छोड़
वळियो मग ऊफणतो बाळो ।४८।
वळग्यो अड़ग्यो तणग्यो वैरो
मीचू रो दुस्ट बण्यो साथी
कितरो धोखो उण दियो मोच
लानत इमड़ै साथी घाती ।४९।
वा आई वळगी बदवेळा
अस्तंगत हुवो रवी दोस्यो
सब करां पसार्‌यां लाल-लाल
जळ बीच बतासै जिम फीस्यो ।५०।
सौभाग घिर्‌यो हा! चहुं दिस सूं
राणी लिछमी मरदानी रो
आ वहूं भाग निय मायड रो
रण-बिजै बण्यो घट हानी रो ।५१।
अन्तस वेळा में धूम माच
खट-खटाक खड़गां वार कर्‌या
सहसां वीरां नैं सुला भोम
मूगा-काबां तरवार भर्‌या ।५२।
इतरै में घोड़ो भोम पड़्‌यो
वा कूद पड़ी रण-ज्वाळ बीच
भळ ज्वाळमुखी री भूमभूम
वा गई जोत नैं सींच-सींच ।५३।
उण रै गिरतां माची वळवळ
सूरज बाहिर जिम आभ सून
दुस्टां पण अत्याचार कर्‌या
ऊबळतो हुयग्यो ठंड खून ।५४।

पण लाभ – हाण जै–जिजै नहीं
वीरां रो दिस्टीकोण बणै
रण फरज ऊतरै जामण रो
तन तानां – बानां नेम तणै ।५५।
इण कुदरत रो है खेल इसो
कुण मेट सकै उण अंकां नै
नर फरज अदा करणं पावै
तो धिन – धिन घण रणबंकां नै ।५६।
भारत भू पर हद करी
अंगरेजा – घमरोल
धरम - करम रै दखल सूं
कूदण लागा होळ ।५७।



# धर्म री फेर जगाई जोत    ७

लेखणी ! समै - फर नै लै'र
    आथम्यो पूरब दिस रो सेर
छायग्यो तमो तोम चहुँ - मेर
    सूर - रवि कुण दीपैला फेर ।१।

निरासावां रा छाया मेघ
    गैण नैं ढवग्यो कुहरो घेर
दूखणा अत्याचार्‌यां देख
    करैं किण किसन - कन्हैया टेर ।२।

सुणीजै हाहाकारी चीख
    चरऱचूं त्रिळसीजै चित्कार
निगुण - सम सासक खूब पषाण
    दाव बैठा करणा दित्कार ।३।

खुल्या कितरी द्रुपदां रा बाल
    भळ पुंछग्यो कितरो सिन्दूर
हुई रीती कितरी मां - गोद
    पापीया सासक अघ सूं पूर ।४।

चिळखती बैं'नां खोया भ्रात
    बांचसो राखी इब किण हात
धूरती दुःखां - दधि रो घात
    सूकग्यो पींजर हाड़ां - गात ।५।

घोमणा पिच्छम दिस सूं आय
पावतां अस्वासण रो दूध
घरी विक्टरिया सासण डोर
फेर ही रह्या धूत रा धूत ।६।
करी सोसण री घण मनवार
लूटतां लख्या न दानव नीच
हेम - विहगी रा पंख मसोस
तळां विच रोंदी आंख्यां मोच ।७।
खुल्या आयात अनैं निरयात
मची कानून मारफत लूंट
खायग्या नोंच - नोंच विकचोड़
कर्‌या फळ – भरिया रूंखा ठूंठ ।८।
भणाई मैकाले री नीत
गुलामी – चादर कर विस्तार
नोकरी करणी हुय इक भाव
संस्कृति रो करणो निस्तार ।६।
मनां में दंसत बैठी मूक
नहीं बोलै - चालै मजबूर
मसीनां रै पंयां पीचीज
दूबळा हुयग्या घण मजदूर ।१०।
मरण लागा छोटा उद्योग
छायगी बेकारी भरपूर
मसीनां सूं टक्कर किण भांत
न लेणी सक्या हुया चकचूर ।११।
खोखळो अरयतंत्र हुय जाय
कठै कुण उण नै सांम झूंत
विना नीवां रै ठंणो भोण
सारय्यां खोखळ कीनो सूंत ।१२।

धरम रैं भावां नैं झकझोर
करयो संस्कृति माथै परहार
जागीया धरमवीर तज नींद
पुनरजागण करीयो सुखसार ।१३।

भूलग्या जिण आतमतत नींव
वतायो आप आपरो रूप
करयो नवजीवण रो संचार
दिखायो सपरो पंथ अनूप ।१४।

दयानन्द रिसी रैं रासां हात
सिखाई सत्य - जोत री बात
वेद अर यज्ञ रूप समझाय
हटाई काळ - अधरड़ी रात ।१५।

प्रगटिया परमहंस सतवीर
पढ़ायो प्रेम - भाव रो पाठ
राम अर किसन नांव इक धीर
नरेन्दर अपनायो सच - वाट ।१६।

सीखिया सपरां भावां सीस
उघड़गी आंख्या फट चरणाट
भावना जळमभोम हितकार
भगावैं कायरता बरणाट ।१७।

आग री चिणगारी लघु रूप
सुळगती वाळैं मोटा ढेर
धुखन्ती धीरैं - धीरैं धुख्ख
भड़कता कितरी लागैं देर ।१८।

सगैं है बाढ़ सरी री जेम
बहै सगळो सूस्टो उण बीच
सगैं है बड़ो भोम तूफान
करैं वड़ डूंगर खेहां कीच ।१९।

समै में चकरावै नर - नार
    समै सूं टकरावै कुण जाय
समै नै नमस्कार सौ वार
    समै रो भेद न कोई पाय ।२०।

समै पर कोटी है वळिहार
    समै सूं मोती निपजै नूर
समै मीं करै सीस वगसीस
    चकर में आवै सो चकचूर ।२१।

समै रा गीत गाय वहु सूर
    समै सूं फोड़ै कुण निय माथ
समै जद पळटै पळटो खाय
    छोड़ दै तन रा गाभा साथ ।२२।

समै दै उथल पुथल री सीख
    समै विण वुध वापड़ कहलाय
समै करदै उळटै नै सूध
    समै रै कुण लगावै लाय ।२३।

समै री धुर नै जाम कराय
    वणावै थिर अगद रो पैर
कळपियो सामो जोवै कुण
    लैरणो रुक आवै जळ लैर ।२४।

समै रो गति नै पळट दिराय
    मात रा रण - वांकड़ला वीर
घड़ै नव - इतिहासां रा चित्र
    धरा नै कपावै रण - धीर ।२५।

## राष्ट्र-आन्दोलण रा दृढ़ नींव ८

अट्ठारै सो सतावन रो
    साको वो किम भूल्यो जावै
जिण ज्वार जाळ जामो जैड़ो
    चख - मगां उफण लाली छावै ।१।
विण चिणगारी नै समझ-बुझो
    नोवींउ हुया सोसणकारी
पण मांय - मांय सुलगी प्रगटी
    धुल रूप विकट धारणधारी ।२।
अट्ठारै सो तिरियासी में
    कलकत्ते में पैला पारी
इण्डीयन एसोसियेसण
    सम्मेलण करीयो सुखकारी ।३।
सुरेन्द्रनाथजी बैनरजी
    हा नमन जोग नर बांकड़ळा
आजाद मात नै करणै अड़
    खोलण बेड़लळ्यां रा कड़ळा ।४।
चौरासी रो चक्कर काटण
    जाणै चौरासी सन आयो
मदरास महाजन सभा थरप
    भर जोस जवानां मन छायो ।५।

सगळा भाई हुय अेकनिष्ठ
थाप्यो सुभ गठण अेक होयां
सगळां री लगन रंग लावै
अब काम सरै कींकर सोयां ।६।
जद भणियां – गुणियां रै नांवै
चिर पांनो चेतनताकारो
मुख ह्यू म सा'ब री बात खरी
परकासी कांग्रेस वारो ।७।
हुय सम्मेलण मुम्बा नगरी
इक जोस भर्‌यो आ'वान कर्‌यो
इक नई चेतना बात नई
नस नव प्रकास जिंदगाण भर्‌यो ।८।
सगळां रै मन हो रोस - जोस
सहु अेक लक्ष्य री रूप हुयां
पण पाण इसी प्राणां पाणी
फूंकार्‌यो काळ – सरूप धुयां ।९।
सतवादीजी गोपाळकृष्ण
जद बागडोर थामी काठी
धर नरम भाव दृढ़ हियै बीच
कायरता कूच करी नाठी ।१०।
दक्खिण दिसि काळ पड्यो भारी
पूना में महारोग फैल्यो
पण प्लेग भयंकर सूं निपटण
नीं अंगरेजां हिवड़ो सैल्यो ।११।
जद प्रलैकाळ री वेळा में
जनता रो घ्यान नहीं
पूना रै रैण्ड
चौजै नै

नाहर नै गउ समभणवाळा
    नीं रंगै सियारां नै जांण्या
सिद्धान्तां – नियमां नेमां रा
    कागद रै पैटां में टांण्या ।१३।
वै मिन्नत अरज्यां रै बळ सूं
    सासन सुधार जाणी माया
सामाजिक - माळो उळभावां
    मुच - भावां सुळजाणी चाया ।१४।
नीं ध्यान धर्‌यो सासन कार्‌यां
    पण दमण - चक्र नै तेज कर्‌यो
प्राकिरतक कोपां री वेळा
    दुस्टां मन में नीं हेज धर्‌यो ।१५।
नेता हा नरम भोळाण में
    वां मानवता सूं तोल कर्‌यो
वां मीठी - चुपड़ी बातां में
    नाहर कद गउ रै बोल कर्‌यो ।१६।
अट्ठारै सौ सताणूं में
    भूकम्प कंपाया हिवड़ां नै
पण उण पापाणां काळजियां
    ना प्रलै कंपाया जिवड़ां नै ।१७।
कर्जन री कूट चाल काळी
    तूफान उठायो हद भारी
टुकड़ा करणै री सुरूआत
    आदेस कर्‌यो अत्याचारी ।१८।
बंगाल - विभाजण कूट चाल
    कर फूट - फांट जमणो चायो
भाई - भाई नै मिड़ा - भिड़ा
    पाप्यां करणो रो फळ पायो ।१९।

वंगाल अनै सह देस बिचा
गम्भीर लै'र लै'री मैं'री
परदेसी स्वेच्छाचार्यां पण
नी लखो कजा गळ में पैं'री ।२०।
कद दीपसिखा कांपणवाळी
वा वात - पात - झंझा सैं'णो
बाधावां कस्टां बीच बधै
डगमगाट कर मारग वैं'णो ।२१।
पण तीन केसरी प्रलयंकर
झट बाल - लाल अर पाल हुया
थामी उजळी प्रजळी वाती
वीरां रै मन घमरोळ छुया ।२२।
आंधी - बरखा री किम मजाल
कुण बांध सकै तूफानां नै
जिण कफण बांधियो केसरिया
धिन - धिन वां रूड़ळै दानां नै ।२३।
ओ बीजो चरण क्रांतिकारी
नी उदारवादी पनप सक्या
जद उग्रवादी दीवाना
कद भीख मांगणी राह तक्या ।२४।
बळवन्ता वर वै बांकड़ळा
वंकिम विस - जोर सताया हा
वै धाक करन्ता वैस्वानर
नाकां घण चणा चबाया हा ।२५।
वां नाक राखियो वीरां री
दिन - रात कड़ी मैं'नत करणं
नी डरया यातनावां सूं नर
हँस हँस गया जेलां भरणै ।२६।

है जन्मसिद्ध अधिकार खरो
सुणलो सुणलो सासनकारी
भारत रो बच्चो बच्चो भड़
है – स्वराज्य रो अधिकारी ।२७।
ओ सिंघनाद कर वीरां में
श्री तिलक तिलक अनुपम बणग्या
पावण आजादी हर कीमत
बस जोस गर्व सीना तणग्या ।२८।
काळै पांणी री सजां नहीं
वरवीर तिलक नैं डरपायो
वै आत्मतत्त्व रा जाणकार
सासन नैं झटकै अरकायो ।२९।
उत्तर –दक्खिण - पूरब पच्छिम
सहु एक भाव में लीन हुवा
पंजाब केसरी वीर पूज्य
मायड़ मुख लख गमगीन हुवा ।३०।
बंगाल नहीं पाछै रैंणो
हर कीमत मोल चुकावै हा
भूपेन्द्रनाथ – वीरेन्द्र घोस
अंग्रेजां खून सुखावै हा ।३१।
लेणै – देणै रै चक्कर में
बस ध्यान राखज्यो अेक वात
पैला लेवो अरि प्राण पछै
अरि माग मरै भिड़ हेक घात ।३२।
सूरत री फूट सूळकरणी
पण सोळै सन में मेळ हुयो
विहुं दळां कर्णधारां रै बिच
मायड़ रै हेतू मेळ हुयो ।३३।

सन इग्यारै री बात खरी
    वंग - मेळ हुयो हद सुखकारी
अधिनेम राजद्रो' कर पारित
    औ सन पण हुयग्यो दुखकारी ।३४।
सन तेरै में डाकी सूधां
    संसोधन कानूनां करियो
अर राष्ट्रवाद रै भक्तां नै
    कुचळण रो भाव मनां भरियो ।३५।
सासन करनै नै भरो फूट
    अंगरेजां मूंडी चाल चली
अर तीस सितम्बर छत्र सन में
    कर थापित लीग न करी भली ।३६।
औ बीज बोइयो ना चोखो
    वै भूड़ो रुद्र रूप करियो
टूकड़ा हुवणै रा भारत रा
    भयकारी खून वैर भरियो ।३७।
सन सतरै रै अधिवेसण में
    अय देव अेकसो रूप धर्‌यो
भज बाल - पाल अर लाल भड़ा
    हुंकार करन्ता जोस भर्‌यो ।३८।
दो हुया टूकड़ा गरम - नरम
    पूरण स्वराज्य री मांग करी
इक नई दिसा अर राग नयो
    भिक्सा वृत्ति उच टांग धरी ।३९।
मिथ रै सामै मिन्नत करियां
    कद छोड़ै वो साधू बणनै
हिंसक नै प्रतिफळ में हिंसा
    सठ रै सागै सठना भणनै ।४०।

जद कानूनां रे वळबूते
काळा कामून करण पाया
उण रो उथळो ऊचन्तो ही
घट पापां खूब भरण आया ।४१।

है देर, नहीं अंधेर उठै
वळिदानी रंग जमावेला
जिण सीस अरपियो मायड़ नै
अरि उण री थाह न पावेला ।४२।

प्रतिकिरियावादी नीत्यां सूं
झकझोर दियो हिवडो पाप्यां
जद पत्थर रै भांडार बिचै
लख नरसंग रूप कड़ो कांप्यां ।४३।

वो रूप सुलपणो प्रलयंकर
ताण्डवकारी अत जोस भर्‌यो
खट खटाक करतो झणण झणण
आजाद हुवण नै रोम कर्‌यो ।४४।

श्री विपिनचन्द्रजो नाद कर्‌यो
हूं भोख मांगणो नीं चाऊं
दै दान अगर आजादी रो
नी दान मांग लेणै पाऊं ।४५।

जद वैण कह्या इम लालाजी
पंजाव - केसरी खरा - खरा
विरती-धिरणा इण भिक्सा सूं
आजादी खातर मार मरां ।४६।

है राज फिरंगी पसुता रो
पसुता – वळ सूं लड़ियो जावै
कुण समझावै निध ठोठां नै
भीतां सूं वहस करी चावै ।४७।

जद कानूनां रै वळबूतै
काळा कामून करण पाया
उण रो उथळो ऊचन्तो ही
घट पापां खूब भरण आया ।४१।

है देर, नहीं अंधेर उठै
बलिदानी रंग जमावैला
जिण सीस अरपियो मांयड़ नै
अरि उण री थाह न पावैला ।४२।

प्रतिकिरियावादी नीत्यां सूं
झकझोर दियो हिवडो पप्यां
जद पत्थर रै भांडार बिचै
लख नरसंग रूप कड़ो कांप्यां ।४३।

वो रूप सुलपणो प्रलयंकर
ताण्डवकारी अत जोस भर्‌यो
खट खटाक करतो झणण झणण
आजाद हुवण नै रोस कर्‌यो ।४४।

श्री विपिनचन्द्रजी नाद कर्‌यो
हूं भीख मांगणी नीं चाऊं
दै दान अगर आजादी रो
नी दान मांग लेणै पाऊं ।४५।

जद वैण कह्या इम लालाजी
पंजाब - केसरी खरा - खरां
विरती-घिरणा इण भिक्सा सूं
आजादी खातर मार मरां ।४६।

है राज फिरंगी पसुता रो
पसुता – बळ सूं लड़ियो जावै
कुण समझावै निध ठोठां नै
भीतां सूं बहस करी चावै ।४७।

सन इग्यारे री वात खरी
वंग - मेळ हुयो हद सुखकारी
अधिनेम 'राजद्रो' कर पारित
ओ सन १ण हुयग्यो दुखकारी ।३४।

सन तेरं में डाको सूधा
संसोधन कानूनां करियो
अर राष्ट्रवाद रं भक्तां नं
कुचळण रो भाव मनां भरियो ।३५।

सासन करनै नं भरो फूट
अंगरेजां भूंडी चाल चली
अर तीस सितम्बर छव सन में
कर थापित लीग न करी भली ।३६।

ओ बीज बोइयो ना चोखो
वं भूंडो रुद्र रूप करियो
टुकड़ा हुवणं रा भारत रा
भयकारी खून वैर भरियो ।३७।

सन सतरं रं अधिवेसण में
त्रय देव अेकसो रूप धर्‌यो
भज बाल - पाल अर लाल भड़ा
हुंकार करन्ता जोस भर्‌यो ।३८।

दो हुया टूकड़ा गरम - नरम
पूरण स्वराज्य री मांग करी
इक नई दिसा अर राग नयो
भिक्सा वृत्ति उच टांग धरी ।३९।

सिंघ रं सामं मिन्नत करियां
कद छोड़ं वो साधू बणनं
हिंसक ने प्रतिफळ में हिंसा
सठ रं सागं सठता भणनै ।४०।

जद कानूनां रै वळवूतै
काळा कामून करण पाया
उण री उयळो ऊचन्तो ही
घट पापां खूब भरण आया ।४१।
है देर, नहीं अंधेर उठै
वळिदानी रंग जमावैला
जिण सीस अरपियो मायड़ नै
अरि उण री थाह न पावैला ।४२।
प्रतिक्रियावादी नीत्यां सूं
झकझोर दियो हिवडो पाप्यां
जद पत्थर रै भांडार बिचै
लख नरसंग रूप कड़ो कांप्यां ।४३।
वो रूप सुलपणो प्रलयंकर
ताण्डवकारी अत जोस भर्‌यो
खट खटाक करतो झणण झणण
आजाद हुवण नै रोस कर्‌यो ।४४।
श्री विपिनचन्द्रजी नाद कर्‌यो
हूं भोख मांगणी नीं चाऊं
दै दान अगर आजादी रो
नी दान मांग लेणै पाऊं ।४५।
जद वैण कह्या इम लालाजी
पंजाव - केसरी खरा - खरां
विरती-घिरणा इण भिक्सा सूं
आजादी खातर मार मरां ।४६।
है राज फिरंगी पमुता रो
पमुता – बळ सूं लड़ियो जावै
कुण समझावै निध ठोठां नै
मीतां सूं बहस करी चावै ।४७।

सावरकर - बन्धू वीर घणा
नी डरणवाळा हा जम सूं
करणी - कथणी में नीं अन्तर
सट भिडणवाळा हा बम सूं ।४८।

कर सगती गठण आत्म निरभर
सह कष्ट नहीं घबरावांला
सहु त्याग करूंयां सुख-धन-वैभव
सपरी आजादी पावांला ।४९।

कर बहीसकार परदेस्यां रो
सामान पारको नी वरतां
नी करां नोकरी सासन री
नीं डरां मातृ - सेवा करतां ।५०।

पण नरम - उग्र दळ बेहूं ही
भल हिवड़ै अेक नेम धरियो
बेहूं अरपित हा मायड़ पै
सगळां मन देस प्रम भरियो ।५१।



# मरणै जलियांवालो बाग : ९

सहीदां रो सूघो इतिहास
कहीजै कलम काठ री केम
सुणआं जिण नांव सुलपणो सूर
सीचनै रमत निभावै नेम ।१।

नीपजै समै वोइया नूर
अड़ोकै करै न लैंरां टेम
समै पर बळिहारी हुय जाय
मात री चावै कुसळां – खेम ।२।

आग री लपटां अर अंगार
ताप सह उजळै अधको हेम
हथोड़ां अर घण सूं थिर होय
धड़ाधड़ झेलै चोट्यां जेम ।३।

धूंकणो धूं – धूं धूंबाधार
सिखावै पूण बहानै सीख
सह्या दुःखां जस धवळ सवाय
चिरै हिय करै न काढ़ै चीख ।४।

रहै उण बाग चमन हर रोज
गन्धर्वं मधरो गम गै'माय
भँवर नित जसां अमारै भोम
उणां नीं काळ कळ्पियो खाय ।५।

नहीं थिर माया – काया जगत
वात आ धारी विस्वा वीस
कफण केसरिया माथै सोय
पिसुणियां खूब पछाड़े पीस ।६।

हुवै नीं कदै किणी रा दास
मनां रा मौजी सिघ लंकाळ
मस्त जीवण मस्तानो माण
देखनें डरै उणां सूं काळ ।७।

उणां रै पावां लंगर – लाज
'गुलामी' सबद उणां नैं गाळ
करै बगसीस सीस भल काज
उमापति रै गळ सोवै माळ ।८।

कूड़ कानूनां रो जंजाळ
माग नैं रोक सकै किण भांत
जोगिया जळमभोम रा जीव
दिखावै कायर जिम नीं दांत ।९।

सन उन्नीस गुणीस कुलखणो
तिरीदस दिवस मास अपरेलः
'रोलट एक्ट' विरोध जतावण
भोड़ ऊमटी रेलम – पेल ।१०।

सगळां रै मन रास मोकळो
होम - हुतासण साथ लियां
बांका अगन पाग मे बांध्यां
रुद्र रूप हुय नाच कियां ।११।

मनां में उण सहु भरग्यो रोस
ऊफणै बाळै तोडो सीव
बांध केसरिया मावड़ माय
रूप धर पांडव – अरजन – भींव ।१२।

'बाग जळियांवाळां' री गाथ
लिखन्तां काळजियो हुय टूक
काळिमा रो लख भूंडो रूप
हिये में खूब उठावे हूक ।१३।
बूढा – बच्चा मरद – लुगायां
भीड़ नदी रो बंती आई
कुण नें ठा ही क्रूर काळ री
खाखी बरद्यां चहुं दिस छाई ।१४।
छूटा घोड़ा दनदन करता
खुडताळां तरवारां ताँई
गोळां – गोळ्यां बौछारां री
लुसियां मायें मातम छाई ।१५।
ताळा लाग्या जद जुवान पर
नींदां नें झट नींद दिराई
आंखें - देख्या हाल कथण कूं
वज्जर ही निय हियो चिराई ।१६।
रुड्डायर गी ऊंची आग्या
गोळ्यां री बौछार कराई
च्यारूं मेर घेर जनता नें
रगत - पूग्णी नींव भराई ।१७।
कितरी चिल्लाहट हा ! सुणनें
जळियांवाळो बाग बिलखियो
ऊजड हुयग्यो भीड़ – भाड़ रो
जुलस मसाणां चमक चिळकियो ।१८।
थळ्यां झाड़दी कितरी पाप्यां
नी देख्यो मधुमास बिचारां
ऊगण सूं पैला ही उणं नें
चुण - चुण नींवां भेरी चिजारां ।१९।

सौरभ फैलण सूं पैला हो
मसळ – मसळ भू माथ गिराई
नहीं देखियो जीवण – जोवन
उण नै दुस्टां कजा दिराई ।२०।

सतवन्ती बैं'नां रै सिर सूं
कितरी वमुवा पाट कराई
लोटपोट कितरो मातावां
खाई खालो सून भराई ।२१।

बूढ़ा जरजर जळमभोम पर
प्राण अरप निय फरज निभायो
झुर्यांवाळै चैं'रां उजळ्यो
मरहुम जिवड़ां जीव जियायो ।२२।

भल सिन्दूरा री ठौड़ भरण
नव दुरगावां में जोस भरयो
निय तन सिरि गोळो – बौछारा
हँस - हांस ऊजळो रगत मर्यो ।२३।

चींख वै काळजियै नै चीर
घाव करग्या जनता भरपूर
खोलग्या हिवड़ै नै झकझोर
करी मानवता चकनाचूर ।२४।

मारदी विहगो पांख मरोड़
देखता रै'ग्या सगळा घूर
बाज जिम अेक झपट्टो वोड़
बिळखतां बचिया विळग्या झूर ।२५।

निसाणां अणगिण मार्या नीच
जिगां पापाण छेकळा क्रोन
घणा ही घोड़ां रो घमरोळ
ताक पर मेल्यो निय रो दीन ।२६।

किया घण बेहद-अत्याचार
धार : जालूधानी सामाव
मात कर असुरां री करतूत
हुया दुस्टां रे मन हड़काव ।२७।
भूलग्या सगळा सूध विचार
छोड़नै मानवता री रीत
मसीनां घड़घड़ गोळ्यां मार
नहीं उण पाप्यां मानो चीत ।२८।
देय घेरो फौजी दीवार
मसळदी मानवता मक्कार
अरे ! वां राक्षस –असुरा- डार
फिटाफिट काळ्यियां विकरार ।२९।
वसन्ती बळती हुयगी बाय
धधकती आंधी अर तूफान
भं'कती मीजर तरु सहकार
द्रं'कती अनल मांडियो गान ।३०।
सहीदां पत्रभड़ सामै देख
पड़्या भू करणै घण प्रतिकार
सोयनै फूलां जिम सुख सैज
जगाई जोतां कर फुत्कार ।३१।
हुगो घड़घड़ाट रो सुर तेज
फाटिया स्रवणपुटां रा पाट
बही धारा सोणित री अप
पाटिया बिहुं सरिता रा घाट ।३२।
कोकिला वीसरगी कळ-कूक
कण्ठ वूठोज्या कंवळी गार
भंवर री मधरी–सी हिय-हूक
मरम में फाटीजी-भू धार ।३३।

रंग उड़ग्यो फीकं मधुमास
पीत रंग हुयग्यो चटपट लाल
जावतै पतझड़ पत्ता झाड़
ठूंठ रूंखा री वाळी खाल ।३४।

जगाई होळी री झळ झाळ
उठन्ती लपटां भरियो जोस
जळाई मनड़ा इसड़ी चाल
गढ़न्तो बळिपथिकां रो कोस ।३५।

उड़ायर री पापी करतूत
कराई धड़ाधाड़ तड़ताड़
हुकम दे हुकमत भरियं भूत
मचाई धड़बड़ाट धड़धाड़ ।३६।

निसाणां जाण सिकारां मार
दनादन गोळ्यां री घमरोळ
मिनख पर इम असुरी व्यवहार
खनाखन करता सायर टोळ ।३७।

सोयग्या सान्त भाव सूं सूर
ठठाका मार ठगां कर ठीक
नीपज्या मायड़ पूत सपूत
टीकग्या राज फिरंगी टीक ।३८।

हूया हक्कावक्का नर – नार
सोच नीं सक्या दुष्टनी चाल
लखी ज्यारूं बांनी धड़धाड़
खींचसी जाणै जीवित खाल ।३९।

वै'या रतनाळा खाळ – प्रवाळ
हुयो कीचड़ हा वो जळियान
निहथ्या लोगां री ले जान
नहीं जूं रंगी हुकमत कान ।४०।

सहीदां रो रत भरणो जाम
देस में उमट्यो इम तूफान
सुळगती चिनगार्यां रो कोस
गाइयो वीरां सीघू - गान ।४१।

बलिदायिकावां रो बलिदान
हमेसा सुणियो फळयुत होत
फूटसी पापां सूं घट पूर
करै चाम्रे सगळा मिल कोत ।४२।

सहस्रों हाथ सहस्रयुत सेन
सामनैं ऊभो डायण जेम
बांधनैं पिंजड़े में सकाळ
चलै बस कितरो कितरो केम ।४३।

देयनैं सस्त्र बोर रैं साथ
देखता उण भीमां रो जोर
निहथ्था पर बधिया वैं हाथ
कियो असुरां अघ भिळनैं घोर ।४४।

रूप हिंसा रो इसो कुरूप
कलम सूं केम वखाण्यो जाय
गोर - रंग रग - रग काळो रूप
कोयलो काळो हिवड़ो काय ।४५।

याद जद काळी घटना आय
करै झंकृत विद्युत सहु काय
क्रोध तन व्याप डील नै खाय
जोस नस - नस में छावै छाय ।४६।

दिवस ओ कींकर भूल्यो जाय
उबाळै ठंडे पड़ियै खून
याद कर जळियांवाळो बाग
खून नस - नस उफणै रत - दून ।४७।

नमन उण जाण अनै अणजाण
सहीदां मायड़ – भू रा लाल
रुहिर रो कतरो – कतरो आण
निभासी उण भगतां री चाल ।४८।

वीर रो भव्य - भव्य बळिदान
मात रो करै सवायो नूर
नमन वां सूरां नै सो बार
सदा हैं संबळ सदबुध सूर ।४६।



## जोस जद हुयग्यो उजळो आग  १०

आजादी रो इतिहास अछै
मणि अेक अेक सूं दीपंकर
आ माळा माळ इसो ओपै
अर विजैमाळ है जीतंकर ।१।

कथ धीर सहीदां री का'णी
घण उथळ - पुथळ रो परवानो
जिणनै संजोयो खूब सबै
ओ कनक - रगत रो शुभ पानो ।२।

सन उन्नीसै री कळळ - भळळ
हिवड़ां में हूक उठावै ही
काळजियै रा कर टूक - टूक
आसा पण धीर बढावै ही ।३।

पण बीस आयग्यो सन डाकी
लाया उग्गरवादी लारा
श्री बालतिलकजी ऊजाळा
हुयगा वै नैणां रा तारा ।४।

बां सूरज सूर सिवा सम बण
उथळा करग्या वे सागीड़ा
किम सूरज - जोती होड़ करै
बंधण तोड़्या जिण बाथीड़ा ।५।

वां राह दिखाई सगती री
सगती विण मिव री पूछ हटै
सगती विण रीतो सब सिव है
सगती है तो कट – काट वटै ।६।
सगती री पूछ हुवै सगळो
सगती विण नर नो मोल कठै
सगती जीवण रो नांव अवर
सगती विण सामै बोल नटै ।७।
सगती रै आगै जगती सहु
हाफै सरणां झट हुय जावै
सगतीसाळी रै चरणां सट
लिछमी ही घणी रैं'ण चावै ।८।
सगती भालां – तरवारां री
सगती बन्दूकां री भारी
गोळां – बारूदां सगती पण
सगती री मैं'मा हद सारी ।९।
सगती भासण अर बोलण में
सगती जगती रो सार – तत्त्व
सगती री लीला कण – कण में
सगती नीसरिया जाय सत्त्व ।१०।
सगती सूं कुण माथो फोड़ै
सगती आदर करवाणी है
सगती सूं वैर नहीं करणो
आ ही दानां री वाणी हैं ।११।
सगती आराणां में सोवै
सगती री लीला है न्यारी
वा रण – चण्डी प्रलयंकारी
उण नैं है मारकाट प्यारी ।१२।

पण भारत री आजादी – पथ
सगती री दीठो रूप जबर
बुध – महावीर री सगती री
वो रूप अंहिसा हुयो वजर ।१३।

च्यारूं कानो गरजण गं'री
ही कड़कड़ाट पाळी फंली
आभै में चपला चकाचौंध
खिलखिलाट करणो ही गं'ली ।१४।

भारत में तानासाही ही
बोलो पर ताळा लाग्या हा
भारत बिण मांझी री तरणी
खोजी तूफाना बाग्या हा ।१५।

कुण थाम्बेला पतवार कड़ी
डगमगाट करती नैया री
वा डगूं – डगूं मझधार पड़ी
गमगमाट करती मैया री ।१६।

आंसूड़ा पूछेला इब कुण
कुण बेड़लयां नै काट करै ?
सपरी आजादी रै खातर
कांटां में सूधी वाट करै ।१७।

कुण साहो – सींगा नै बांधै
कुण म्याऊ रै मुख जावैला
कुण जिन्दगाणी रो मोह तज्यां
भौतिक सुख तजणे पावैला ।१८।

कुण बांध घूघरा पांया में
भोपा बण जैर उतारैला
कुण बणे गोड़ियो काळवेळ
सगळां रा कारज सारैला ।१९।

उण काळ हिमांशू री उमळी
चयारूं दिस परगासी जोती
या मनमोहन री मोहक छिब
वारूं उण पै हीरा – मोती ।२०।
गांधीजी धारी वागडोर
चहुँ ओर निरासावां गै'री
हो तमी निसा वादल छाई
काटां री वां माळा पै'री ।२१।
गांधीजी थाम्मी डोर हाथ
कवळा हाथां नै कर कठोर
वैरिस्ट्री छोड़ी देस – काज
सोई सगती नै कर बटोर ।२२।
भण वैरिस्ट्री वीलायत सूं
वे खुसी - खुसी भारत आया
अट्ठारै सो ईकाणूं में
वे लै'र सै'रका मन लाया ।२३।
तद दोय वरस रै अन्तर मे
सन तेराणूं नूतो लाया
अर अफ्रीका में अेक वरस
करणा मै'नत उत्सा'छायो ।२४।
पर उठै पैरवी बोजी हो
वो रूप : कुलखणो सामै हो
गोरै सासन रो दमन - चक्र
जाणै ऊभो आराणै हो ।२५।
भारतवास्यां नै काळा गिण
अणगिणत जुलम जुल्मी करिया
गांधीजी धार्यो सस्त्र नही
'सत्याग्र' सूं कारज सरिया ।२६।

आ बीस बरस री अवधी ही
    अफरीका में लाम्बी छाई
जद हिंसा छोड़ अहिंसा रै बळ
    निश्चय सूं प्रगति पथ जाई ।२७।
बिन वैराग त्याग ना टिकणो
    साध्य जिसो ही साधन सोवै
गांधी जी रो अमर सत्य गुर
    झूठै सुख कुण जीवण खोवै ।२८।
चवदै सन में अफरीका तज
    कीरत फैली भारत आयो
जुद्ध लड़ण नै आजादी रो
    पूत प्रथम आ सिक्सा पायो ।२९।
पनरै सन में अत दुखदायो
    मोचु गोखलैजी जद पाई
काळ – कळुषियै री करतूतां
    हिवड़ै नै टूक - टूक कराई ।३०।
बीजा नेता फिरोज'साजी
    सरग सिधाया पनरै सन में
पाई बहूं दिव्य अमरता
    उण री मूरत गदरै मन में ।३१।
अफरीका रै बाद मा'तमा
    चम्पारण – आराण जीतियो
दुखी दसा कृसकां भायां री
    तिनकठियो कानून बीतियो ।३२।
अस्त हुयो निलहां रो सासन
    रैयत निय री ताकत जाणी
वहम दूर हुयग्यो ओ बां रो
    सफल हुई गांधी री वाणी ।३३।

फेर द्वंध सासन करणे रो
मौटफोर्ड कानून गाजियो
रौलट एक्ट रोम भर दीनो
न्याव – भाव तत्काल भाजियो ।३४।

पंडित मोतीलाल गाजिया
तीनूं वातां बन्दी हुयगी
वकील–अपील–दलीलां – रस्तो
बन्द हुयां न्यायालै सुयगी ।३५।

जळियांवाळा बाग कांड वै
मानवता मैं काळी पोती
हियै माचग्यो सगळां कळमळ
दानवता वा प्रगटी कोती ।३६।

चैटरजी बंकिमचन्दरजी
खोल्या जिण भावां रा बारा
गीत पून पावन रच जग में
आदर करै सीस झुक सारा ।३७।

'वन्दे मातरम्' गीत सुलपणो
जिण अनुपम अंकित भाव भर्‌या है
आजादी री बळिवेदी पर
स्वाहा – स्वाहा वेण झर्‌या है ।३८।

आ तान तरग्यां सूं उमटी
मुरदां मैं संचरै रस फुहार
सब अर्पित पुत्रां रो जीवण
स्वीकार करै मां सुत – जुहार ।३९।

इण आजादी री जोतां में
गुरुदेव जोत जगमग करणी
साहित्य – सृजण रै भावां में
जिण प्रेम भर्‌यो मायड़ धरणी ।४०।

वां जळियांवाळो कांड़ सुमर
'नाइट' आभूषण त्याग कर्यो
विद्रोह मच्यो मन सान्ति रै
चन्दन रै रूंखां आग भर्यो ।४१।

वां बंग - भंग आन्दोलण में
सगळां सागै सट भाग लियो
कर्जन री भूंड़ी चालां नै
उथळो देवणियो नाग हियो ।४२।

तिलक महोदय रै प्रयाण सूं
अणपूरित गति सामैं आई
छोड़ गया बिळबिळात करता
नहीं दया वै कजा दिखाई ।४३।

गांधीजी रै दृढ़ कांधां पर
आयो सारो बोझो भारी
तंई पण सकटां पार करै
हिम्मत रो किम्मत है सारी ।४४।

बीस दिवस सन बीस बरस रो
कर बहिस्कार परदेसी रो
अण - सहयोग रो संखनाद
हो झगडो देस - विदेसी रो ।४५।

जय बोल्न सह हिन्दू - मुसलिम
ने'रूजी भाखो आ वाणी
हो कारण साफ खिलाफत रो
अंग्रेजां नी इसड़ी जाणी ।४६।

वल राजकुमार फिरंगी रा
कर बहिस्कार पूरो विध सूं
सन इकिकस में भारत आया
दीख्या लच्छण इकरंगी सूं ।४७।

हो जोर सोर रो आन्दोलण
    सान्ति सूं चाल रह्यो नीको
पण पाँच फरवरी वाइसैं
    चौरा – चोरी लागो टीको ।४८।

इक्कीस सिपाही हुया भस्म
    इक थाणेदार हुयो स्वाहा
गाँधीजी रो हिवड़ो कांप्यो
    हुद च्यांरूं मेर हुयो हा – हा ।४६।

जद सात दिनां रैं बाद जबर
    बारैं फरवरी नैं रोक करी
आन्दोलण हुयग्यो ठण्ड – टीप
    पण खूब खिलाफत लोक भरी ।५०।

सरकार अपड़िया गाँधी नैं
    वो चार मार्च रो वाको हो
अर सजा दिराई छव – बरसी
    वो बज्जर रो वर साको हो ।५१।

पण स्वार्थ बिगड़तो देखपरो
    दो वरस बाद छोड़्या पाछा
आन्दोलण हुयग्यो खतम अर
    हिन्दू – मुसलिम भोड़्या माचा ।५२।

सट जिळमी हिन्दू – महासभा
    भळ आजादी नैं पावण नैं
ही अेक दीठ उण समैं सदा
    खळ – खळां दूपणां खावण नैं ।५३।

सी आर दास विठ्ठल भाई
    श्री मोतीलाल अेक हुयग्या
झट नींव स्वराज्य पारटी री
    उन्निस सौ तेइस सन छुयग्या ।५४।

इक धार गंग री धुर पवीत
निसरी धवळागिर सूं गैंरी
भारत रो रूप मुलपणो हो
अम्रित अजस्र धारा लैंरी ।५५।
नेतावां रै हिय हर निपजो
आजाद मात करणै खातर
वस बळिवेदो री साकळ वण
दृढ़ निरचै निव भरणै मातर ।५६।
पट हियै हिमाळै उथळ - पुथळ
मांची सांची मायड़ भगती
गौरव भारत रो सुमर - सुमर
जग जाग जगा जायड़ सकती ।५७।
आजाद हुवै भारत जननी
ऊजळ गौरव घण ऊजाळै
जामण रा सगळा जायन्दा
सहुभाव - कळ्ळियां नैं वाळै ।५८।
काठी वेड्यां काटण खातर
वीरत्व· रूप सामै· आयो
इण जोत ऊजळी परगासण
ध्वज मुक्त गगन में · लैंरायो ।५९।
वस अेक लगन ही रात — दिवस
रं'वै अखण्ड भारत म्हारो
भाई - भाई रो भाव भरां
नां वाधां पापां सिर भारो ।६०।
जिण अेक भोम पर जिळम लियो
इण माटी - भावां वोरोज्यां
इण मे पाळित - पोषित हुयनै
अब कठै न जावां टोरोज्यां ।६१।

जय संखनाद री तेज चमक
    भ्रान्तरिक नेह रो मन धार्‌यां
भारत रै'सो नित खण्ड-रहित
    साकळ प्राणां री वर वार्‌यां ।६२।
वै वज्र बण्यां हा वांकड़ळा
    फौलादी वपु चमचम करता
वै कुन्तां भ्रर तरवारां नै
    मल रूप भ्रहिंसा सूं भरता ।६३।
सन उन्निस सौ भ्रट्ठाइस में
    साईमन घणो विरोध हुयो
'साईमन पूठा चळ जायो'
    घट जनता रै मभ क्रोध चुयो ।६४।
लाठी रा वार धड़ाधड़ सह
    लालाजी सुरग सिधाया हा.
गोविन्दवल्लभजी ने'रूजी
    लाठ्यां भ्रर डंडा खाया हा ।६५।
सह देस माचगी हूंक कळळ
    हड़ताळां जोर माचिया हा
लालाजी मारक भ्रफसरियै
    भड़ताळां सोर ताचिया हा ।६६।
हिन्दू - मुस्लिम इक पौधं रा
    वै सुमन सुलपणा थातो हा
दोनां रो रगत रंग लायो
    भाई - भाई बिहुं साथो हा ।६७।
इक खून खोळणो दोनां में
    भारत री भ्राजादी खातर
बेहूं रो भारत माता है
    वळिाय रा भ्रै सपरा पातर ।६८।

है हाड - मांस अर रगत अेक

अंकी 'पोयो पढ़िया योधा

अेकी जाण्यां फूल्यां - फळिया'

अंकी धरती रा अं पीया ।६९।

सन सत्ताइस में हाय ! भणूं

किम बिस्मिल वीर कहाणी नूं

असफाक-लाहिडी - रोसन नम

झड़ आंख्यां नीर बहाणी सूं ।७०।

मायड़ रा लाल सपूत खरा

फांसी रै तख्तै वै झूल्या

जिण फूलां रै सीसां गूंथी

'माळा अरपित कर सै फूल्या' ।७१।

किम त्याग सहोदर रो भूलां

वै आंखड़ल्यां रा तारा है

'आजाद' – 'गुरू' नै भूलां किम

बै निरमल गंगा - धारा है ।७२।

वै जोत प्रकास्यो जोस इसो

टक्कर सासन सूं लैणै रो

वै जगमग करती जोतां सूं

हो हसणो जाणं पणै रो ।७३।

जद क्रान्तिकारियां जोस-बढ़यो

व आग उगळता सोला हा

वै ठोस ठोस बस ठोस वीर

खुद बण्या बम्ब रा गोळा हा ।७४।

बां करण धमाको चाह करी

दो वीर सामनै आया हा

पंजाब केसरी भगतसींघ

बटुकेस्वर सिंघणी जाया हा ।७५।

वै वीर असैम्बली मौन – पूंच
झट इंकलाव रो गाज करो
दो बम्ब फेंकिया दणदणाट
सगळां री सुध-बुध नाज मरो ।७६।

खळबळाट माच्यो भौन बीज
सगळां रा देव कूंच करिया
पण वीर हुया थिर जांगां पर
मरणा मौकै किण सूं डरिया ।७७।

कद वीर डरै कस्टां – कुन्तां
वै कस्ट – कण्टकां सुमन झरै
झट झटक चक्रमो' माया रा
उण सूं मायड़ रा काज सरै ।७८।

नीं झुकणा कदै कूड़ आगै
दृढ़ पथ सूं नीं डिगणैवाळा
कर ओक वार निहचै मारग
नीं कदम पाछ धरणैवाळा ।७९।

जद न्यायालै' में केस गयो
साजिस रो जाळ जुलमकारी
सरकारी पक्स गवा' झूठा
फांसी रो रगड़ो कर भारी ।८०।

हो जुल्म नहीं बां रो कोई
बस आजादी री मांग करो
मानव पर मानव रो बन्धन
सोसण काटण री डांग धरो ।८१।

माता नैं दुखी देख मनड़ो
वंटे रो नहीं सान्त रैंवै
तन - मन रो मो'छोड़ जल्दी
धमन्यां में तपत रुहिर वैंवै ।८२।

नाहर सम हिन्द केसरी नै
जद बीच कटघरै ऊभायो
तणग्या आंखड़ल्यां रा डोळा
सासन नै झटकै सूगायो ।८३।

जद मुलजम वण्या भगतसिंघजी
हुय निडर सामनै आया हा
मायड़ री माण करणखातर
वै सांचा सिंघणी जाया हा ।८४।

धिड़ अभिभासक सरकारी जद
चोगाधारी सामै आयो
जद जुरम बतायो मुलजम रो
कमरै में सन्नाटो छायो ।८५।

कस देसद्रोह री बात कही
पूरी गाथा कै'णी चाही
झूठो दळियो कथणं चीन्यो
वा मिसल बणी पोथी साही ।८६।

बस देसद्रोह री बात सुणी
व सिंघ करी हुंकार कड़ी
कर अट्टहास हंस – हंस जोरो
जाणै ही उण नै खुसी बड़ी ।८७।

वै लगा ठहाका जोरा सूं
ठट्ठा जाणं करणी ठाणी
कुण री हिम्मत ही रोक सकै
भट्टा हा दुरगम चट्टाणी ।८८।

अर अरज करी न्यायालै'नै
सरकारी दुस्ट पक्सधारी
ऊचै स्वर सूं निय बात कही
दानवता रूपी नक्कारी ।८९।

फूहड़ री भांत हँसी - हँस नै
अपमान करै न्यायालै री
मच माणहाण कर कोरट री
अपराधी दरजै - आलै री ।६०।
हूं अरज करूं इण कारण सूं
ओ मुलजम खतरनाक भारी
इण देसद्रोह रै अभियोगी
तोड़ी मरजादा - हद सारी ।६१।
पण फेर हँसी सूं रोबीलै
ऊतर दीनो इचरजकारी
हँसतै - हँसतै ही दे उथळो
जाणै कीनी फट बमबारी ।६२।
हूँ हँसूं हँसूं'ला हर वेळा
हूँ जीवण भर हंसतो रै'सूं
हू फांसी चढ़नां भी हँससूं
थूं सजा दिरासी जद कैमूं ।६३।
तद किसी अदालत आवैला
फरियाद करैला किण विध सूं
हू चूंमूला जद फन्दै नै
हू हँसी हँमूला इण विध सूं ।६४।
हू लाड़कुंवर हूँ जायड़ रो
मायड़ रो फरज उतारूंला
थां रै इण कूड़-कपट आगै
नी अपणो सीस झुकाऊंला ।६५।
सुण अमर वैण मस्तानै रा
सगळां री बुध चकराई हो
हक्का - बक्का सक्का हुयग्या
सासन री थिढ़ मकराई ही ।६६।

वो अट्टहास कर फेर हँस्यो
तांडव - नर्तक ज्यों गर्वगार
जाणै हो आग लपरकी वो
मद भार फिरंगी सर्वमार ।९७।

आखर रच ढोंग मुकदमै रो
वां नै फांसी पर लटकाया
यहूकेश्वर पाछै उम्रकैद
गुरुदत्तजी ऊपर अटकाया ।९८।

ही मिट्टी हद वा फौळादी
चापेकर - बन्धू बणया वजर
फाँसी रै फंदै हेत करयो
सगळां मायां री अँकनजर ।९९।

श्री वासुदेव चापेकरजी
फांसी - तख्तै ढिग जावै हा
अलबेलो चाल खुसी भारी
जाणै जीवण - सत पावै हा ।१००।

वां जल काटता भाई नै
अलविदा करी सदा सागै
अर काळकोटड़ी घुन उमटी
जाण गुड्डी चढ़गी थागै ।१०१।

ही बालकृष्ण जी री गर्जन
हाँ ठाठ - बाट सूं गमन करो
हूं ही दो दिन में आऊंला
भारतमाता नै नमन करो ।१०२।

गूंजी आ कारा में गर्जन
पाछै हो संखनाद पावन
रण बीजमंत्र आजादी रो
या गीता रो सपरो गावन ।१०३।

श्री वासुदेवजी री सा'दत
ऊजळ जस साथै संग कर्‌यो
चापेकर - कुळ री दमक-चमक
मल बळिवेदी पर रंग भर्‌यो ।१०४।



## सीख श्रद्धानन्दजी री साख 11

पढ़ोजै इतिहासां रा प्रिस्ट
    रगत री स्याहो देवै साख
सहीदां रो सपरो सहकार
    रखण ऊँचो भारत रो पाग ।१।
जिणां री सा'दत जब्बर - जंग
    मुलायो अँगरेजां रो खून
झाक वा खे - खैं करणी झूंब
    बाजती बाळै पानां - पून ।२।
नमूं उण वज्जर रोड़ां - नींव
    घणी सह घुमरां री घमरोळ
होम निय तन -मन सगळो सींच
    कुदाया पाप्यां रा घण होळ ।३।
सदा हो सगळो बातां सूध
    नहीं हा अन्यावां रै माग
खरी - सच सिन्धु रागणी फूंत
    जगाया सूता नाहर जाग ।४।
जुद्ध में जूझारां झट जूंझ
    झटकिया झटकै सूं जंजाळ
तोड़नै ताळा तोमतड़ाक
    जळाई जोत जाळनै जाळ ।५।

सहीदां रो माळा सीकार
  अेक सूं अेक चमकणो नूर
सीस रो सौदो करणा सूर
  गूंज गूंजित कर गर्णा पूर ।६।
इणा जूझारां रा सिरमौर
  हुया श्री स्रद्धानन्द मा'राज
जगाई ज्वाळां पळपळ जोत
  लपरको लगा फिरंगी राज ।७।
करा मानवता रो प्रतिबोध
  तोड़नै असत रूढ़ियां बन्ध
मार अग्यान – अविद्या - माल
  जोडनै सत्य - न्याव संबन्ध ।८।
पिता रो नानकचन्द जी नांव
  रैवता जालंधर रै पास
लागतै फागण मइनै लाल
  जिळमिया तेरस मिती खास ।९।
गाइजै तळवन सांचो गांव
  हुयो वो इण नामै विख्यात
जिळम रो गण बिहु चंद गुणीम
  वृहस्पती मुंमीराम : ख्यात ।१०।
रिसीजी दयानन्द गी सीख
  पळटियो उण रो जीवण - भाग
हियै में स्रद्धा सुमन हुलाय
  सुध हुय फूंफाड्योडो नाग ।११।
असत रा पड़दा आपै - आप
  ऊगड्या सत्य सामनै झांख
न्याव रै खातर कर फूंफाड़
  निरासावां नै पूंछै नां'ख ।१२।

स्वास्थ्य भर सत री राख्यो ध्यान —
लीन हुय सांचे पथ स्वाध्याय
चैतनै लोगां नै कर चेत
सरू कर करड़ो भल अध्याय ।१३।
भणाई पतनी नै भरपूर
उडाया झटक अन्धविस्वास
तोड़नै तमोतोम आकास
खुलाई कन्यासाला खास ।१४।
जिणां री लगन लगायो जाप
थरपियो गुरुकुल आस्रम लाग
थागड़ी में कर कुम्ळां – खम
सीख संस्कृति – सिक्सा बेदाग ।१५।
सभ्यता – सस्कृति री गुंजार
हिन्द री हिन्दुस्तानी रीत
भणाई अँगरेजी बेकार
करो भारत विद्या सूं प्रीत ।१६।
मा'त्मा बणग्या मुंसीराम
छोड़नै वकालात तत्काल
हवन में अर्पित जोवण होम
धनो – धन जळम भोम रा लाल ।१७।
मा'त्मा हा बै सांचे राग
लोममो' माया परै भगाय
दीप्त हुय दीपसिखा री दोठ
अमर हुयग्या भल आग लगाय ।१८।
नजर डोढ़ी रै'तो हररोज
फिरंगी सासन चाल – कुचाल
रास आस्रम सूं करड़ो रोस
बम्ब रा 'वरकसांप' गिण ढ़ाल ।१९।

'क्रान्तिकारी श्राश्रम रा सोग'
किया इण बात मनां में घात
लिखी 'वैलंटाइन' श्रा बात
नहीं पण लागी ढोरी हात ।२०।
'क्रान्ती री है श्रासम सींव
लिखी श्रा बात चिरोले श्राप
भरम मेटण खातर सरकार
खुदाई कर श्रांगण नै साफ ।२१।
फराई दो – दो गज तक जांच
'रैमसे' – 'मेस्टन' नजरां बीच
नहीं लागो जद हातां रै'स्य
लोभ रा फंदा फंस्या मीच ।२२।
राष्ट्र रो खूब निखार्‌यो रूप
छवी रै लागण दियो न दाग
बाप – मां श्रर सच्चा श्राचार्य
गिणीज्या स्रद्धा सूं बेदाग ।२३।
श्रसल में गुरुकुल रै उद्‌यान
सीचने रगतां – समजळ नूर
लगाई श्रमरलता लय – लूंब
गूंजती कर सगळा भ्रम दूर ।२४।
मास श्रायो श्राखर श्रपरेल
साल सूं इग्यारें तारीख
लियो गुरु मुंसीजी सन्यास
पाड़ने सतरे सन में लीक ।२५।
हुयो स्रद्धानन्द – रूप स्वरूप
वृहस्पती मुंसीजो साकार
कर्‌यो स्रद्धा सूं स्रेष्ठ करार
जगत में कदै न [मानी हार ।२६

हा सैनिक खासा श्रावलाख
सगळा मारकिया तईताज
डाकी वणियोड़ा सत्ता सूं
श्रावै ही वां नें नहीं लाज ।३४।
जद श्राजादी रा दीवाना
श्रागै वधता हो जावै हा
उण मक्कारां री बुध - वापड़
माथा भूंवाळी खावै हा ।३५।
फट भीड़ चोरनें फूंफाड़्या
श्री स्वामीजी सामैं श्राया
गोळी चालण सूं पैलां डट
नीडर बोल्या सिंवणी जाया ।३६।
जनता पर गोळी मत दागो
पैळां म्हारो सीनो दागो
रे दुस्टां ! खड़ो सामनें हूं
छोड़ो श्रो रंगभीनो तागो ।३७।
तनु छव फुट रो लांबो तगडो
वपु फौळादी कंचन वरगो
थो ठोस ठोस हो दीप्त तेज
सासन - सगती भंजन करगो ।३८।
लखवाद लाख उण लाखीणैं
हँस उठ्यो छोड़ मो माया नैं
भख देवण नैं वळिवेदी पर
श्रा डट्यो कटावण काया नैं ।३९।
हट हक्का-वक्का सैनिक हा
भुखगो संगीना लाज धार
हेठै मूंडा हा वांड्यां रा
फूंफाडा मानो श्राज हार ।४०।

सट स्वामीजी री अग्या सूं
    सान्तो सूं जुलस गयो आगै
वो सायर गुहिर गभीर वण्यो
    लैं'रां रो ज्वार वैं'यो सागै ।४१।
दिल्ली री जामा मस्जिद सूं
    भासण स्वामीजी गजब दियो
संकीर्ण भाव नैं ताड़ – ताड़
    ओ खेल अजूबो अजब कियो ।४२।
है भाई हिन्दू – मुसलमान
    ओ आच्छो संखनाद कीनो
अपरैल माह रै चौथे दिन
    सुभ प्रेम भाव बोयो भीनो ।४३।
सन उगणीसै उगणीस वरस
    वै वण्या दूत मानवता रा
दट देस भक्ति रै दीवानैं
    लागा तोड्या दानवता रा ।४४।
भण हिन्दू – मुस्लिम अेक भाव
    संकीर्ण भाव नैं त्याग करो
रट एक रटण आजादी री
    बस जळम भोम रो भाव भरो ।४५।
पच्चीस ' दिसम्बर उगणीसै
    अधिवेसण अद्भुत भारी हो
अमृतसर मे भेळा हुयनै
    वो सासन कड़ो प्रहारी हो ।४६।
घण जळियांवाळा री घटना
    मनड़ां में मायूसी छाई
पण स्वामी जी री गूंज पड़ी
    मुरदां मरदानी हद पाई ।४७।

जद प्रकृति परीक्सा लेवे है
    कुण रोड़ा वण आड़े आवे
पण उद्यमसीलां रे चायां
    हुय सूळ फूल खुसियां छावे ।४८।
चौबीस दिसम्बर उगणीसे
    वरसा रो जोर हुयो भारी
वे आसावां चकचूर करी
    आभे फाटे ने किम कारी ।४६।
पण आंधी पांणी – तूफानां
    कद डगां झुकावें मतवाळा
पग पद – पर पर टक्कर पाणे
    पण कदे न झुखणा सतह्याळा ।५०।
पलकां पर सगळां मान हुकम
    अतिथी सुख सूं घर ठें'राया
बस सफळ हुवेला ओ ऊछब
    सहु जोसभाव मन ले'राया ।५१।
हा स्वागतकारी स्वामीजी
    सरकार डरपणी सांचाणे
चक्करकारक चक्कर टूट्या
    टूट्या सहु तागा कांचाणे ।५२।
बां भासण दीनो हिन्दी में
    कर मंत्रमुग्ध स्रोतागण ने
अंगरेजी रो बेसुरो राग
    नी डिगा सक्यो वांरे पण ने ।५३।
वो सदाचार - नैतिकता रो
    हो परवानो पावन मन रो
वो भासण हो इक दिव्य ग्यान
    हो मंत्र खरो मानवपन रो ।५४।

बां छुआछूत री तोड़ काण
उद्धार करण री बात करी
दळितां नै आगै लावण री
कथ मानवता है जात खरी ।५५।
बंधण तोड़ण नैं सासन रा
बां री आतम रा भाव वै'या
कितरां दिन दळितां दुख पायो
अणगिणती रा अपमान सै'या ।५६।
जद सिक्खां रैं सत्याग्रै मैं
आपण गूंज्यो भू – अम्बर मैं
वै उन्नीसै मन बाइस में
बुध बोल्या दमम दिसम्बर में ।५७।
अर याद 'गुरू गो बाग' करां
बां नैं कारा में पुगाया
हुय गिरफ्तार स्वामीजी हुँस
भूंडो सत्ता नै सुगाया ।५८।
भल सांमल हुयग्या स्वामीजी
जद हिन्दू महासभा सागै
दळितां री दसा देख दुख सूं
बां नाता तोड्यो उण तागै ।५९।
अर अलग रूप सूं दळितां री
बां सरू करी सेवा करणी
वै जुटग्या झट सांचे मन सूं
वै वीर बण्या देवा वरणी ।६०।
नवलीग हुयो आन्दोलण जद
घण मुसलमान बणनै लागा
पूठा सुध किया आगरै रा
अर भरतपूर लागा धागा ।६१।

बो परिवर्तन करणैवाळो
हिन्दू – हिन्दूपण त्याग कर्‌यो
पण स्वामीजी रो कर्मठता
भल आर्यधर्म अनुराग भर्‌यो ।६२।
वां पाँच लाख नै मुध कीनो
अर आर्यभाव में लीन हुया
कर आर्य धर्म रो सखनाद
वै कदे न पण गमगीन हुया ।६३।
वै कदे न डरिया चालां सूं
झुखणै री कदे न चाल चली
वै भगत खरा हा लड़ाळू
बस आग – माण ही भोळ भली ।६४।
पण होणी रूप अरूप धर्‌यां
देखावै निय रो रूप गजब
बा आवै वादै पर निहचै
अणचीती धर्‌या कुरूप अजब ।६५।
वा काया नै छोड़ै कोनी
कितरा नर - नार उपाव करै
बा फट्टा फट्ट अर बड़बड़ाट
मानव उण पंजै हेठ मरै ।६६।
पण उण जस नै कुण मार सकै
जिण बळि देदी बळिवेदी पर
जिम मख में आहूती ज्वाळा
भड़काळ कळुषियो छेदी भर ।६७।
तेत्रीस दिसम्बर दिन आयो
वो काळदूत स्वामीजो रो
सन उन्नीसौ छब्बीस अरे
हो अमरदान दानाजी रो ।६८।

अब्दुल रसीद मुद्धी – खातर
घोखै री मन में घात भरी
आयो कपटी पापी – भूंड़ो
काळख री लुच्चं बात करी ।६६।

वै फायर कीना घड़घडाट
कोमल काळजियै वार किया
दागी गोळ्यां अय दागीलै
स्वाम जी इण जग पार थिया ।७०।

स्वामीजी जग सूं राम कियो
कै राम नाम जग में करग्या
आंसूडां झरती आंखड़ल्यां
पण वै ज्वाळा मख में मरग्या ।७१।

कस दुस्ट छंकळा तीन किया
सागर पर तिरतै पोत बीच
स्वामी बेड़ो आजादी री
अब्दुल रसीद हो कीत नीच ।७२।

वै लेखक हा प्रतिभासाळी
सेवक नेता हा संन्यासी
हा आर्य - संस्कृती रा पोषक
हा मिनख धरम रा विन्यासी ।७३।

अब्दुल रसीद फांसी पाई
वै जुरम कियो मुजरम भारी
वै धोखै सूं पन्नग पकड़्यो
वै दानव मानवता भारी ।७४।

जद स्वामीजी री सीख धार
मानव मानवता पावैला
तज भेद-भाव भूंडा टंटा
संगीत प्रेम रा गावैला ।७५।

## केसरी–जोरावर–प्रताप ॥ १२

आजादी रो इतिहास घड़ण
सैं भारतवासो त्यार रह्या
वां अतीत गौरव माण करण
पुरखां ज्यु तन पर वार सह्या ।१।
हा सिंघ केसरी बारठजी
सगळो परवार सुवायो हो
वै आण राख नीं झुक्या कदै
जिण कदै न सीस झुकायो हो ।२।
वै क्रान्तिकारणां वीर - वीर
ज्वाळा रा पुंज जीविता हा
वै फौळादी वपु नै धार्यां
विसघूंटी ज्वाळ पीवंता हा ।३।
वां चक्कर दीनो मासन नै
बहुरूप धारणा जोगी हा
वां घर - ग्रिस्ती सूं छोड़ मोह
नी दो मूंडा वोगी हा ।४।
पण फेंफायोड़ां अंगरेजां
चकरीवम अक्कल खाई ही
आजादो रै दीवानां नै
सीधै – सादै कद पाई ही ? ।५

उन्नीस बरस भूमितन रह
जोरावर सासन त्रिदकाया
सन उन्निस सो उनतालिस में
पा सुरग फिरंगी पिदकाया ।६।
यां यज्ञथळी रा होता वण
जजमान वण्यां नियनै वारे
बळिवेदी माथै झपट - लटक
मायड़ रा काज सहू सारे ।७।
वै सपरी मौत मरण जाणै
नी पीठ दिखावै आराणै
ओसर आयां अरियां साणै
रीझै फणधर सींघू रा.णै ।८।
वीरां री फसल अठै होवै
भूमि आ मरदानांवाळी
है कुण कैवै ऊजाड़ धरा
आ धरा माण राखणवाळी ।६।
इण ही उपजायो है प्रताप
गोरो – बादळ चूंडो हमीर
इण ही माटी में जिळम लियो
जैमळ – पत सम अमर वीर ।१०।
पदमणी अठै वण पळभर में
वण गई भस्म री ढेर अठै
कह रह्‌णो खड़ो चितोड़-थंभ
कुंभा जेडा भट फेर कठै? ।११।
राजस्थानी इतिहास गवा'
इतिहास मांडणा वीर खड़ा
तरवार - कलमड़ी हाथां में
साहित्य – चितारा तीर बड़ा ।१२।

चारण - बारठ चेताणा चर
    वै कसाधात करणा खारा
जद कायर भागण मता करै
    उण वेळा पै मरणा मारा ।१३।
वै खुद असिधावण प्रलै माच
    वीरां री जोतो बणं सदा
वां रै रैवंतै आराणं
    गीदड़िया सीहा हणै कदा ।१४।
आजादी री थो - रचना में
    राजस्थानो हद नांव कियो
बारठ - कुळ रा त्रय ऊजागर
    त्रय देव कदै नी दांव दियो ।१५।
हा देव तीन वै दिव्य हदां
    सहु सिंध वीर अर मतवाळा
केसरीसिंघ - जोरावर जी
    सागै प्रतापजी सतआळा ।१६।
तीनां ही कीनी तकरारां
    तीनूं स्वाहा हुयग्या जग में
भाई - भाई अर बेटै रो
    तीनूं बळि हुय सुयग्या मख में ।१७।
बारठ - परवार अगाऊ हो
    हंस - हांस मीचु सूं लड़नै में
नीं पाछा कदै तीनूं हुवणा
    फंस - फांस सूळिया चढ़णै में ।१८।
जागीर - हवेली छोड़ सुखां
    वां क्रांतिकरण मग पग धरिया
तीनां री सला' अेक - सी ही
    नीं सूळी - फांसो सूं डरिया ।१९।

दिल्ली में गया वीरवर दो
काका भतीज री वर जोड़ी
जोरावर सिंघजी अर प्रताप
मौके पर जाय वम्ब फोड़ी ।२०।
जद वायसराय हार्डिंग री
असवारी निसरी दिल्ली में
बुरकाधारी काकै वा'यो
बम फटाक फूटयो खिल्ली में ।२१।
घायल हुट वायसराय दीठ
चट चररमरर चरमायो हो
स्काटलैंड यारड सगळो
फट मररमरर भरमायो हो ।२२।
नी पकड़ सक्या जोरावर नै
जद सगळां रो अब चूर हुयो
भज अकल भुंवाली भैसाणै
वो बूंद सारखो सूर चुयो ।२३।
चट राज फिरंगी चकरायो
हाजर हक्काबक्का हुयग्या
घबड़ाया हाकळ-बाकळ घण
नाजर छक्का-तक्का सुयग्या ।२४।
सिंघ जेळ केसरी खाट रह्या
बेटाजी आग सुलगता हा
जागां-जागां फिर धूमधाम
नव जोत जळाय मुळकता हा ।२५।
जद आसनाड़ ठेसण माथै
इक रोज खड़ो हो वर प्रताप
ठेसण-पति छद्मवेस चीन्यो
पकड़ाया कीनो पाप धाप ।२६।

धोखै नाहर बंधण पड़ग्यो
वो तोड़ण चाहै जंजीरां
बाईस वरस री छोटो वय
कुण देता कारां खंजीरां ।२७।

कितरा दुख दिया कसायां कट्टु
कर साम - दण्ड -दम भेद किया
आस्वासण रै बफ्फारां में
उण वज्जर - हियै न छेद किया ।२८।

भीसण कस्टां नै सह - सहनै
मणि-कंचन-काया तत्त्व भिळी
बाळक प्रताप री लघु वय में
सत सत्त्व सत्त्व सूं तत्त्व मिळी ।२९।

हा ! पितरी-हिय टुक-टुक हुयो
पण वदै न कायरता व्यापी
धनजळ छोड्यो काराघर में
उण री हद्दां कद कुण नापी ।३०।

जोरावरजी नै हद मिळिया
श्री रासबिहारी जी साथी
बस चकचम नैणां चाह बसी
भड़ चिणगार्‌यां उजळो छाती ।३१।

बम फेंक बच्या बुरकाधारी
पत्थर - पत्थर में आग भरी
वै फौळादी सगतीसाळी
वां मायड़ - दुध नी दाग करी ।३२।

जद भारत - भू थरथळी जठै
कद राजस्थान रह्यो लारै
जौहर - ज्वाळा री लै'र उठै
अँगरेज फिरंग्यां नी धारै ।३३।

मरणै-खपणै अ्रण त्याग करण
    मायड़-हित में कद पाछ करी ?
भामासा हुयग्या दानवीर
    हा कळातरू सम गाछ भरी ।३४।
जद-जद आजादी रै जग में
    सावळ-दिखणा री चाह करी
सद जुगलकिसोर बिड़लाजी भी
    दे चंक यग्यकुंड थाह भरी ।३५।
हनुमानप्रसाद जी री मैं'मा
    वै धरम भाव रा पाळी हा
हा क्रान्तिकरण मग पग धरिया
    वै भल भावां प्रतिपाळी हा ।३६।
वर जमनालाल बजाज बीर
    गांधीजी रा सच्चा संगी
वै इण आजादी रै जग में
    रह्योया हमेस अ्रेक रंगी ।३७।
करतां अ्रणन्त सेवा मां री
    कर त्याग नांव अर विणां नांव
वै नींव बण्या वज्जर बणनै
    आजादी रा दृढ़ बण्या पांव ।३८।
मायड़ रै चरणां सीस थाप
    वां फरज उतार्‌यो खरो-खरो
हँसतां-हँसतां वे बळि हुयग्या
    वां करज उतार्‌यो सरो-भरो ।३९।
पण होणो हाय हबीड़ा दै
    नी आसै-पासै वा देखै
वा आयां वळ्‌यां खबीड़ा दै
    नी सज्जण-दुरजण वा पेखै ।४०।

कुण उण पूतां रो होड़ करै
    वै राह दिखावण श्राया हा
बां कदै न धन-जस चाह करी
    वै ही सगळां रा चाया हा ।४१।



## गूँज भारत छोड़ो री छाप 13

महामनाजी पूत आतमा
सत्य भाव रा सांचा साखी
वाराणसी विश्वविद्यालय
भारत मां री गरिमा राखी ।१।
आजादी रै वीर सिपायां
सिक्सा पाई उण में गै'री
महामना श्री मालवीयजी
दिव्य पुरस हा सच्चा लै'री ।२।
जिण री अमर पताका फै'री
गुंण गावणो मै'मा भारी
आजादी रै दिव्य हवन में
वळि दी सुख - वैभव री सारी ।३।
छोड़ वकालत आछो चलणो
वीर समै री मांग पिछाणी
आजादी रै खातर हढ़णी
सत्यवचन कर निरमल वाणी ।४।
खूब जूझीया हेमाळो बाण
स्वच्छ भाव री पावन गंगा
सच्चा पावक खूब चमकिया
दळ - वळ जूझ्या जिप्पण जंगा ।५।

राजाजी अर वीर विनोबा
जै प्रकासजी आगै आया
लालबहादुर पटेल वीरां
आजादी साकै रंग लाया ।६।

जद पूर्ण स्वराज्य री मांग करी
लाहोर हुयो प्रस्ताव पास
सन उन्निस रै छैकड़लै दिन
हो नेंरूजी रो भाव खास ।७।

छब्बीस जनवरी त्रिस सन रो
आजादी रो दिन थाप दियो
सगळै भारत खुल खुसो करी
आसा - विस्वासो छाप दियो ।८।

तद नमक नेम नैं तोडण नैं
दडी जात्रा झट आप करी
छव अपरेल तीस सन में ही
धरणा बंदो हद धाम करी ।९।

सह – विनै अवग्या आन्दोळण
जद जोर पकडतो जावै हो
अर बीच विळायत सम्मेलण
वो गोळमेज कै'लावै हो ।१०।

इरविन – समझोतो हुय प्रसिद्ध
सप्रू – जै'कर रै कै'णां सूं
अर छूट्या नेता दाढ़ाळा
पण बात बणी ना बैणां सूं ।११।

हा भीमराव जी भोम जठै
किम भूल सकां इण रचना में
जगजीवन राम हरख मन सूं
जिण किया – काम संरचना में ।१२।

पंचाट मेकडोनल्ड हुयो
जद कांगरेस में फूट भरी
वल्लभ भाई अर राजाजी
राजेन्द्रप्रसादजी कूट करी ।१३।
पण ने'रूजी संग नेताजी
इण रं विरोध में राय करी
यें वाम पंथ रा हा साथी
ना उणां मनां आ दाय भरी ।१४।
जद क्रिप्स - योजना बीयाळिस
नेतावां रँ सामी आयी
झट पाकिस्तानी मांग मानणी
पिछवाड़ै सूं आणं पाई ।१५।
नेतावां ने दाय न आई
जणं मांग कीती ठुकराई
जदै सफल ना हुया क्रिप्स जी
विफल हुया वां करी विदाई ।१६।
जद बीयाळिस सन जोस भर्‌यो
'भारत छोड़ो' री गूंज उठी
अंगरेजां रा हिवड़ा कांप्यां
सगळां काळजियां धूज भरी ।१७।
झट दूर हटो दुनियावाळां
म्हांर इण सपरै भारत सूं
किण ही सूरत इब नी सैवा
म्हे पिंड छुडासां भारत सूं ।१८।
म्हे करां - मरां ओ भाव धार
इब रुद्र रूप दिखळावालां
नी फाकी में थांरी आवां
हक सीनै रै बळ पावांला ।१९।

आ सुणी घोसणा हाक भरी
अंगरेजां कुट चाली चाली
अणबंध करो झट कांगरेस
पकड़ा पकड़ी कीवी काली ।२०।
पण राममनोहर री चालां
अगरेजां नै तग करणो ही
कृपलाणी पारँ जिम नर हा
रीतै घटकां नै भरणी ही ।२१।
कस्तूर मुबासित कस्तूरो
सन चम्मालिस में धाम गिया
गांधीजी हद बीमार हुया
जद जेळ धाम सूं मुगत किया ।२२।
मन पैंताळिस में वैवल सूं
उण प्रस्तावां मत भेद थियो
पण मुगत हुया नेता सगळा
सिमला – समझोतो खेर वियो ।२३।
श्री रासबिहारी हा बांका
तज घर-ग्रिस्ती रो-मोह जाळ
छोड़ी चलणो वाकालत नैं
अगरेजां खातर कळू – काळ ।२४।
आजाद फौज रै दीवानां
आजाद हियै रा मतवाळा
कानून - रूप वृध कानूनां
वां पार किया हद - खळबाळा ।२५।



## रटण रट खून करो बगसीस  १४

जद पूतां और सपूतां रै
मन रै भावां घमरोळ मच्यो
भारत – भू नैं आजाद करण
दृढ़ निस्चै री मच लगन सची ।१।

जद हिंसा और अहिंसा रै
पथ बीच भर्यो तरणी पाणी
हद तूफानां रो बातचक्र
घिरतो दीठो दुःखां - साणो ।२।

चण तमोतोम रै मारगियै
सहु हाथ – पांव फूलण लागा
चौलट जिसड़ै कानूनां री
मण याद चैन चौकड़ भागा ।३।

सहु जळियांवाळो काण्ड लिवर
रग – रग में रगत रक्त राच्यो
आंखड़ळ्यां हुयगी लालचट्ट
मन घुमड़-घुमड़ खळबळ माच्यो ।४।

पूरब – पच्छिम रो पथ राही
उगतां काळोतम छेद करै
निय करां पसार्यां कुन्त-नखां
दिन में दिनयर दिव भेद भरै ।५।

ज्यूं - ज्यूं आगै रथ वहन करै
सूरज रो तेज हदां भारी
विस रो तरणी तमतमाटणो
कुहरै रै वैरी बळिहारी ।६।
किम सूरज रै ऊगन्त टिकै
कुहरै रा बादळ दूखणिया
वै अेक झपट्टै भसम होय
थर थर कांपै जग सूकणिया ।७।
तरणी रो तेज गैंण दीसै
चमचमाट करतो सुखकारी
सगळी आसावां पूर सरै
हरखावै सगळां नर - नारी ।८।
जिम अेकळ द'ढ़ां चूर करै
सेळां री घण घमरोळ सह्यां
नी पीठ दिखाणो अरि आगै
मस्ती मस्तानी डोल कर्यां ।६।
जद सकट हिच्चका खाय-खाय
इणगी – बिणगी डगमगो गुड़ै
तड़ै - खड़ै झट धवळ तणो
पण कदै न उळटो राह मुड़ै ।१०।
नाहर नै कद कुण जीत सकै
कुण उण रै मूंडै रास धरै
इसड़ो कुण जायो पूत जमी
अँगारां सूं किम हास झरै ।११।
जद आसावां हुय चूर - चूर
हिय वीच निरासावां जामी
पट्टाभीजी नै कर परास्त
नेताजो बागडोर थामी ।१२।

वो खून उबळतै रो सोरू
रक्तिम काया कंचन वरगो
इतरो साहस इतरी सगती
मायड़-भगती रग-रग भरगी ।१३।
उण नांव ख्यात हुय खूब फळ्यो
नेनाजो नेता सुखकारी
वो अतुळ बळां रो भव्यरूप
वार्यां उण पर सहु नर-नारी ।१४।
हो वज्जर-गात मोम हिरदो
दुख देख न सकियो मायड़ रो
आंसू मेटण नै लोही दे
धन फरज निभायो जायड़ रो ।१५।
उण कह्यो न करसूं नोकरडी
सहु सुणलो राज फिरंगी री
नीं धार गुलामी ड्‌पग बेया
नी चालूं चाल दुरंगी री ।१६।
नीं जीणै में भद्रक नर-नूं
मायड़ रै थण नूं चूंटण में
धिक कायर पूत कपूतां धिक
धिक परवस ऊमर खूटण में ।१७।
वै कदै न पद री चाह करी
वो जन-जन रो हो हितकारी
वातां में अकज न समै खोय
वां काम कियो ऊजळ भारी ।१८।
वां चेत चेतना खूब भरी
हुंकार करन्तां हाक चोच
थे खून करो बगसीस मनै
आजादी रुखां सींच-सींच ।१९।

हूं स्वतन्त्रता री जोत दीप
सींचूं ला ऊजळ रगत – तेल
इण सिर जाणी रै सौदे में
ओ खूब अजूबो अमर खेल ।२०।
इक कतरो लाय लगावं इत्र
चिणगारी रूंखां बाळ – बाळ
बस खून – खून री अेक रटण
हूं काट फिरंगी कुटिळ चाल ।२१।
जद सिंघापुर री सभा बीच
सिंघ गरज करी हुंकार कड़ी
इतिहास लिखण आजादी रो
दो - खून - खून इण कड़ी घडी ।२२।
ओ कागद आगै करूं आज
कुण कर्ज उतारै माता रो
निय तन रो पूत रगत इण पर
जग निरणै करसी दातारो ।२३।
आजादी रो इतिहास नहीं
काळी स्याही लिख पावैला
इण कारण सह सुणलो भायां
रक्त नदी बहाई जावैला ।२४।
हर समै कफण माथै बाध्यां
कुण सामो आवै पग मांड़ै
सिर लेना - देणो सौदै सूं
कुण टक्कर लेवै कर खांड़ै ।२५।
थां में है जोस खूब भरियो
हूं जाणूं थांरै भावां नै
थे सगळा जोगी बण्या खड़ा
बाळ्यां सगळी इच्छावां नै ।२६।

रट एक भाव है सगळां रै
मन में सगळां तूफान भर्‌यो
रवी अनै माचणा हो सगळा
जम नी ठं'रै हुंकार डर्‌यो ।२७।

थे तोड़ सको चट्टानां नै
तूफानां री गति रोक करो
थे पिमुणां नें भट खूंद-मूंद
मायड़ रै झोळं खुसी भरो ।२८।

अै रगत मड़्या आखर हुयसी
सोन हीरां सूं अधक मोल
कुण होड़ करैला भारत री
बोलो, बोलो सहु खरो बोल ।२९।

याद्र सुभाप आ वात कह्‌यां
कागदयुन हाथ बधाया हो
वस देर उठं ही किण विध री
सगळां मन जोस सवायो हो ।३०।

म्हे देसां - देसां खून खून
लालीयुत दीवां आब करां
अो व्यथ पुटंग न जावैला
सिन्दूर मात री मांग भरां ।३१।

कागद पर कागद लाल हुया
पण भीड़ ऊमड़ी नदो जेम
आगै ही आगै बढ़तो वा
सुभ भलो सुलयणी हुई टेम ।३२।

सहु बोल्या सांचो नेम करां
आजाद मात नै करणै रो
नी झुकां - फिरां सामैं जम रै
म्हे नेम करां रण मरणै रो ।३३।

की है मजाल गादड़ियां री
नाहर री मूंछ मरोड़ करै
कुण सामी दिस्टी करै दुस्ट
झड़ झाड़ रूंख करोड़ झरै ।३४।

थां रै जीवन्ते नेताजी !
हुयसी आजाद भोम म्हारी
कितरा छळ – कपट करै कूड़ा
वारै था पर जग बळिहारी ।३५।

थे लाल मुलपणा हो थाती
म्हारी आंखड़ळ्यां रा तारा
था पर म्हे सगळा न्योच्छावर
थे प्राणां सूं प्यारा म्हारा ।३६।

थां रो पड़सी पद अेक जठै
म्हारा सहस सिर जावैला
थां रो बस अेक इसारो ही
सच नई रोसनी लावैला ।३७।

थे भारत – भू रा वाकड़ळा
वांकड़ळा वीर सवाया हो
थां ऊपर मायड़ वळिहारी
सत सूरज सीस नवाया हो ।३८।

जस हिन्द केसरी केसर जिम
थां री मैं'मा उत्सा'कारी
थां प्रलयकर हुंकार किया
वन्दण सिस्टी करदे सारी ।३९।

तन तप्त सूर्य नैं मात करण
है दिव्य नूर चमकणवाळो
इण खाखी वरदी भव्य छिप्यो
वैं'वै जिण इंगित रत - नाळो ।४०।

थां रो इक नांव सुमरतां ही
मुरदां में जिन्दगाणी छावै
थां रो लख वीर सुलपणो तन
सगळी कायरता मर जावै ।४१।
थां इसड़ी जोत जळाई थिर
म्हा ऊजनराह घड़ो चोखो
थां दीप – सिखा इसड़ो थरपी
भागे सगळो काळख दोखो ।४२।
आजाद फौज रै पद प्रताप
पद चिन्हां छाप इसी गांणो
जय हिन्द – हिन्द जय रो नारो
मुरदां मे मनु जीवण ठांणी ।४३।
आजाद फौज रो दीवानो
आजाद फौज री शुभ वांणी
आज़ाद हुवड़ रो जोत जळा
नूतन प्रकास लाली तांणी ।४४।
जद सभा विसर्जित हुई भला
नेताजी – काया दमक उठी
जय हो जय हो नेताजी री
सासन री उण मूं चमक छुटी ।४५।

# प्रकासी स्वतन्त्रता री जोत

दूजं जुध में अँगरेजां री
सत्ता डिगती ही जावै ही
जद फौजां हार फिरंगी री
घण ठोड़ां मुंह री खावै ही ।१।
आजाद फौज हद हावी हुय
बीजी फौजां पर छावै ही
नेताजी री न्यारी कमान
आगै चढ़ती ही जावै हो ।२।
भंड हीमन जोस घणो भरियो
अँगरेजां बुध चकरावै हो
बांका वीरा लंकाळा सूं
सुहणां में ही डर खावै ।३।
आजाद फौज आगै वढ़ती
आसाम सींव लगलागं हो
कितरी सी सींव बाद रहगी
आजाद नीव तक ताकै ही ।४।
चम्माळिस में ही भारत रो
सोभाग्य सामनै आवै हो
पण जापानी दुरभाग सांतरो
दुःखकारी दुख छावै हो ।५।

जद दोय मोरचां मांथै चा
    इम्फाल - कोइमां रै थाणां
जापानी हार मान सुयग्या
    डाको ब्रीटस हुयग्या खाणां ।६।
जापान समरपण जद करियो
    परवस आजाद फौज हुयगी
हा ! आसावां चकचूर हुई
    अरमान दसा कसमस सुयगी ।७।
जद लालकिला में ढोंग कियो
    अभियोग चलायो वीरां पर
खोटा – झूठा नीं दका डरे
    भड़ भिड़ै चालणां खीरां पर ।८।
सन पैंताळीस नवम्बर में
    जद हुई कारवाही जारी
सेनाणो सही बात अड़िया
    झूठी सत्ता पड़गी सारी ।९।
कद डर्‌या मोत सूं मतवाळा
    कट मीचु सदा ललकार करै
हँसता – हँसता जा आराणै
    वण रुद्र रूप किलकार भरै ।१०।
वां जुल्म कियो हो नीं कोई
    बस स्वतन्त्रता री चाह करी
जुलमां – सासण सूं टक्कर ले
    नीं निय कस्टां सूं आह भरी ।११।
आखर में गिरफ्तार कीना
    मायावी – सत्ता – मक्कारां
फण पण फणधारा फूंकार्‌या
    वीणा रै मत्ता वक्कारां ।१२।

आजाद फौज रै वीरां पर
झूठा अभियोग लगाया हो
फांसी देवण री चालां फण
सहु निममां परा भगाया हो ।१३।
ढिल्लन-सहगल अर सा'निवाज
मुळजिम बण सामै आया हो
भूला भाई नियमां - नाहर
कानूनो चक्कर लाया हो ।१४।
किम नून साब'री चलती जिद
झूठां रै पांव नहीं होवै
झूठां साक्सी नीं ठै'र सक्या
जाणै खोटा मिणिया पोवै ।१५।
सरकार उळझतो जावै ही
सरकारी पक्स रगड़ खाई
सिंघ पकड्यो मोदड़ री गत-सी
निय भूंडै लक्सण जकड़ पाई ।१६।
आखर वं मुगत हुया तीनूं
तीनूं अळबेळा देव तीन
भारत रो सपरो दिव्य भाग
बां सतपथ राखी टेव कीन ।१७।
धिन – धिन भूलाभाई जी धिन
थे कानूना रा नाहर हो
थां कानूनो जबड़ां बिच मूं
तीना नै काढ्या बाहर था ।१८।
जद हुयो चुणाव विलायत में
मजदूर पारटी जीत गई
सरकार अ्रेटली भार सांभ
चालण चाही निय नीत नयी ।१९।

भारत री ख्यांत करण खातर
इक केबीनेट मिसन आई
पावांला इव आजादी झट
सुण आसा री किरणां छाई ।२०।
सतदोय पांच रै बरखिलाफ
जद लोग अल्पमत में थाई
पण लोग अड़ाई टांग परी
कुल तेवत्तर सीटां पाई ।२१।
अर दंगा भड़क्या भड़भड़ाट
सह सम्प्रदाय – विस जोर पियो
घड़घड़ाट मारकाट माचो
माउंटबैटन पंचाट कियो ।२२।
जद ब्रीटिस संसद एक्ट कियो
हा ! टुकड़ा भारत रा हुयग्या
मायड़ रा लाड़कुंवर भिड़-भिड़
सगळा नाता – रिस्ता सुयग्या ।२३।
अंगरेजां री खळ भूंड नीत
माता रा खंड टूक करिया
आ विगत विदारै हिवड़ै नै
टाबर - नर - नार कूक मरिया ।२४।
नै'रूजी नै भल संभळाई
सासन री वागडोर सारी
जिण कियो समरपण सुख जीवण
हा पंडितजी हीमतकारी ।२५।
भाई – भाई बंटवारो कर
चाम्रे दीवार खड़ी करलै
पण भाव मनां रा निरमळ हुय
हिय प्रेम - भाव पाछा भरलै ।२६।

पनरै अगस्त सैंताळिस नै
सोनै रो सूरज उदित हुयो
लाली लख प्राची लाल - लाल
जन-जन रो मन अत मुदित हुयो ।२७।
रूप सुलखणो राष्ट्र – तिरंगो
जद मुगत गैण में फं'रायो
आजादी री सुभ वेळा में
सरसित हुय सहु मन लं'रायो ।२८।
आजाद हिन्द री जैं जैं जैं
जैं इण पर मरणवाळां री
जय राष्ट्र - तिरंगै री जैं जैं
जैं बळि निय करणंआळां री ।२९।
जैं स्वतन्त्रता री जोतां री
जिण परकासो जोतो गं'री
मन अेक भाव बळिमाग मच्या
जिण कस्टा री माळा पं'री ।३०।
भारत माता मुख वैण भर्‌या
हू अखण्ड हूँ अखण्ड रं'ऊं
आरत मन हुय मत डरपीजो
हूँ प्रचण्ड हूं, न खड सं'बूं ।३१।
म्हारै खातर थे खूब लड्या
हूँ च हू थारी खुसियाळी
फळ फून बगीचां खूब फळै
खेतां सरसावै हरियाळो ।३२।
सगळा हिळमिल आणंद पावै
सगळा सुख–दुख में अेक भाव
बस रिच्छकरण आजादी नै
सगळा रो हुयसी सद् सभाव ।३३।

उत्तर–दक्षिण – पूरब - पश्चिम
    है सगळां रो इकसार रूप
था री मायड़ विस्तृता धरा
    समझो थे म्हारो ही सरूप ।३४।
हूं गदगद हूं किम वैण कहूं
    थां करज उतार्‌या मायड़ रा
जुग – जुग जीवो आसीसां दूं
    थे लाडकुंवर हो जायड़ रा ।३५।



ओ काव्य रूप मणि भावां रो
    आजादी रो परवानो है
सहु वीर सुलप्रणा री गाथा
    सपरो उजळो वरपानो है

# वतन रै वास्तै

वतन रै वास्तै जीणो
वतन रै वास्तै मरणो
वतन री जिन्दगाणी वर
वतन रो माण घण करणो ।१।
इणी में जिळमियां वीरां
वधायो माण माता रो
कर्‌या हँस सीस रो सौदो
धन्य है नांव दाता रो ।२।
हरखियो मात मन हुळस्यो
तिरंगो गगन बिच फै'र्‌यो
खुसी सूं झूम 'जन-मन-गण
गावंता सदा मन लै'र्‌यो ।३।

□□□

मानवां रो मानवां सूं
प्रमयुत मिळणो हुवै
आदमी हैवानियत सूं
एकदम न्यारो हुवै ।
आदमी इन्सानियत रो
रूप सर्वोत्तम वणै
आदमी इन्सानियत सूं
रूप पुरुषोत्तम वणै
रूप पुरुषोत्तम वणै ॥

□□